हरिभूमि
रेवाड़ी भूमि
रोहतक, रविवार, 30 नवंबर 2025

तापमान

अधिकतम 24 .5 डिग्री
न्यूनतम 9 .5 डिग्री

10 बढ़ती डिजिटल गतिविधियों के कारण जागरूकता और सतर्कता आज की प्रमुख आवश्यकता

10 शंखनाद के साथ गीता महोत्सव का आगाज, कार्यक्रमों ने बांधा समां

खबर संक्षेप

मेघवाल समाज की बैठक जलालपुर में आज

रेवाड़ी। मेघवाल उत्थान समिति हरियाणा के सचिव भूपेन्द्र शेखपुर ने बताया कि मेघवाल समाज की बैठक 30 नवंबर को सुबह 10:30 बजे गांव जलालपुर में आयोजित की जाएगी। मीटिंग में समिति के सभी पदाधिकारी, सदस्य व महिला शक्ति मौजूद रहेगी। बैठक में समाजहित को लेकर विचार-विमर्श किया जाएगा

संस्था का माता-पिता को समर्पित कार्यक्रम आज

रेवाड़ी। हमारा परिवार संस्था की ओर से रविवार 30 नवबर को पंजाबी धर्मशाला में माता-पिता को समर्पित संस्कार निर्माण के कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। संस्था के संयोजक दिनेश कपूर ने बताया कि लक्ष्मण सिंह यादव विधायक कार्यक्रम में मुख्यातिथि व समाजसेवी राहुल यादव विशिष्टातिथि के रूप में शिरकत करेंगे। संस्था की ओर से श्री श्याम दिवाना मंडल के प्रधान एडवोकेट मनोज यादव, राष्ट्रीय व्यापार सेवा संघ के जिला अध्यक्ष दीपेश भार्गव, समाजसेवी हेमंत ग्रोवर व पर्यावरणविद अमिता ग्रोवर का अभिनंदन किया जाएगा। कार्यक्रम में सफाई अभियान से जुडे सफाई मित्रों को सम्मानित भी किया जाएगा।

एथलेटिक्स चैंपियनशिप के लिए ट्रायल कल

कोसली। सोनीपत के सीआरए कॉलेज में 13 व 14 दिसंबर को होने वाली दूसरी हरियाणा किड्स एथलेटिक्स चैंपियनशिप के लिए रेवाड़ी जिले के खिलाड़ियों के ट्रायल एक दिसंबर को गांव बाबड़ौली के पंचायती लिए जाएंगे। जिला एथलेटिक्स एसोसिएशन के सचिव विशाल यादव व कोच सतेंद्र ने बताया कि चैंपियनशिप के लिए जिले के खिलाड़ियों के ट्रायल सुबह 9 बजे से शुरू होंगे। प्रतियोगिता में लड़के व लड़कियां दोनों हिस्सा ले सकते हैं। प्रतियोगिता में 2014 से 2015 के मध्य जन्मे 12 वर्ष, 2016 से 2017 के मध्य जन्मे 10 वर्ष व 2018 से 2019 के मध्य जन्मे 8 वर्ष से कम आयु वर्ग के बच्चे भाग ले सकते हैं। ट्रायल प्रतियोगिता में 60 मीटर, 80 मीटर, 100 मीटर व 200 मीटर की दौड़ सिहत लॉन्ग जंप व रिले दौड़ कराई जाएगी।

कैबिनेट मंत्री में नगर परिषद की जमीन पर अवैध कब्जों के मामले में ईओ पर जाहिर की नाराजगी

ग्रीवेंश मीटिंग में मंत्री के सख्त तेवर, भूमि विक्रय के मामले में रिटायर्ड तहसीलदार चार्जशीट

निशानदेही कराकर चारदीवारी करवाने के निर्देश

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

शनिवार को हुई जिला लोक संपर्क एवं परिवेदना समिति की बैठक में अधिकारियों की कार्यशैली को लेकर प्रदेश के शहरी निकाय मंत्री विपुल गोयल तेवर सख्त नजर आए। उन्होंने सख्त लहजे में कहा कि काम के प्रति लापरवाही बरतने वाले व गलत रिपोर्ट देने वाले अधिकारी सस्पेंड होने के लिए तैयार रहे। उन्होंने परिवादों की सुनवाई करते हुए रिटायर्ड तहसीलदार को चार्जशीट करने के आदेश जारी किए। कैबिनेट मंत्री गोयल ने भ्रष्टाचार, अवैध कब्जे, पानी की शुद्धता और खिलाड़ियों की मौत जैसे गंभीर मुद्दों पर सख्त रुख अपनाते हुए अधिकारियों और बिल्डरों के खिलाफ तुरंत कार्रवाई के निर्देश भी दिए। मंत्री ने परिवाद की सुनवाई करते हुए ऑक्यूपेशन सर्टिफिकेट जारी करने के मामले में डीटीपी को फटकार भी लगाई। इसके अलावा नगर परिषद के जमीन पर अवैध कब्जों के मामले में ईओ पर नाराजगी जाहिर की। ग्रीवेंस कमेटी की बैठक में पुराने व नए 17 परिवादों में से 14 परिवादों पर सुनवाई की गई तथा 3 परिवाद आगामी बैठक के लिए पेंडिंग रखे गए।

ग्रीवेंश कमेटी की बैठक में लोगों की शिकायत सुनते विपुल गोयल

रेवाड़ी। ग्रीवेंश कमेटी की बैठक अपनी शिकायत रखते हुए राज विजय। फोटो : हरिभूमि

ऑक्यूपेशन सर्टिफिकेट के मामले में डीटीपी को फटकार

कैबिनेट मंत्री विपुल गोयल ने गांव बास रतनथल निवासी राज विजय की शिकायत पर कोसली के पूर्व तहसीलदार जितेंद्र कुमार के खिलाफ पांच एकड़ जमीन के दस्तावेजों में छेड़छाड़ के आरोप में चार्जशीट दाखिल करने के आदेश दिए। शिकायतकर्ता ने कहा कि तहसीलदार की गलती से उन्हें करीब 5 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है। मंत्री ने इस जमीन की खरीद-फरोख्त करने वाले लोगों के खिलाफ भी मुकदमा दर्ज करने के निर्देश दिए। इसके अलावा सनसिटी में निर्धारित टीडीएस से अधिक टीडीएस वाले पानी की सप्लाई और बिना शुद्ध पेयजल व्यवस्था के ऑक्यूपेशन सर्टिफिकेट जारी करने के मामले में मंत्री ने डीटीपी को फटकार लगाई। साथ ही उस समय ऑक्यूपेशन सर्टिफिकेट पर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी के खिलाफ भी चार्जशीट दाखिल करने के आदेश दिए। इसके साथ ही सनसिटी बिल्डर के खिलाफ भी एफआईआर कराने निर्देश दिए गए। मंत्री विपुल गोयल ने कहा बिना शुद्ध पेयजल व्यवस्था के ओसी कैसे जारी हो गया। शुद्ध पानी उपलब्ध कराना बिल्डर और विभाग दोनों की जिम्मेदारी है।

रेवाड़ी। बैठक में अपनी समस्या रखते हुए महिला। फोटो : हरिभूमि

बैठक में ये रहे मौजूद

इस अवसर पर विधायक लक्ष्मण सिंह यादव, भाजपा जिला अध्यक्ष डा. वंदना पोपली, डीसी अभिषेक मीणा, एसपी हेमेंद्र कुमार मीणा, एडीसी राहुल मोदी, एसडीएम सुरेश कुमार, एसडीएम बावल मनोज कुमार, एसडीएम कोसली विजय कुमार यादव, डीएमसी ब्रह्मप्रकाश, सीटीएम जितेंद्र कुमार, डीएसपी डा.रविंद, डीएसपी जोगेन्द्र शर्मा, भाजपा के जिला महामंत्री हिमांशु पालीवाल, कुलदीप चौहान, रत्नेश बंसल व प्रवीण शर्मा सहित सहित सभी अधिकारी मौजूद थे।

मामले में जांच के निर्देश दिए

कैबिनेट मंत्री ने नगर परिषद की जमीन पर हो रहे अवैध कब्जों पर मंत्री नाराजगी जाहिर करते हुए नप ईओ को निर्देश दिए कि शहर में अपनी भूमि की निशानदेही कराकर उसकी चारदीवारी कराने के लिए शीघ्र टेंडर लगाए जाएं। खसरा नंबर-242 की प्रॉपर्टी आईडी गलत तरीके से जारी होने के मामले में जांच के निर्देश दिए गए। गांव बालधन खुर्द निवासी रिछपाल ने शिकायत दी कि उनके खेत की जमीन के समीप अवैध रूप से सात-आठ फुट तक मिट्टी की खुदाई कर ली गई है। इस मामले में राजस्व मंत्री ने एसडीएम को जांच करने के निर्देश दिए। बैठक में दो युवा खिलाड़ियों की असामयिक मौत का मामला भी उठा।

विधायक अनिल यादव ने अनाज मंडी में जन शिकायतों की सुनवाई की

विधायक ने दिए भाकली में पानी निकासी का प्रोजेक्ट तैयार करने के निर्देश

- गांव कोसली के हरदेवा जोहड़ में भी बरसात का पानी भरने से ओवरफ्लो की समस्या पैदा हो जाती है

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कोसली

विधायक अनिल यादव ने अनाज मंडी में जन शिकायतों की सुनवाई की। इस मौके पर विधायक ने पानी की निकासी व बाइपास बनवाने जैसी विकास योजनाओं को लेकर अधिकारियों के साथ विचार-विमर्श किया। इस अवसर पर कोसली के एसडीएम विजय कुमार यादव भी मौजूद थे। विधायक अनिल यादव ने कहा कि भाकली-1 और भाकली-2 गांव में बरसाती पानी की निकासी के लिए उचित व्यवस्था होनी चाहिए। इस पानी की निकालने के लिए दोनों गांवों की भूमि का सर्वे प्लान बनाया गया है, जिस पर पाइपलाइन ड्रेन तथा एसटीपी बनवाने के लिए आगामी कार्य योजना तैयार की जाएगी। उन्होंने कहा कि गांव कोसली के हरदेवा जोहड़ में भी बरसात का पानी भरने से ओवरफ्लो की समस्या पैदा हो जाती है। इस पानी की निकासी के लिए पाइपलाइन बिछाने का सर्वे कराया जाए। विधायक ने एसडीएम विजय कुमार यादव को निर्देश दिए कि कोसली-भाकली का बाइपास बनवाने के लिए जुड्डी व नठेड़ा गांवों के किसानों से बातचीत की जाए, जिससे कि अधूरी पड़ी हुई परियोजना को पूरा कराया जा सके। इस अवसर पर बीडीपीओ अनिल यादव, जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी तथा पंचायती राज विभाग के एसडीओ, जेई, चेयरमैन कपिल, चेयरमैन दुष्यंत सिंह व जिला पार्षद जीवन हितैषी सहित अनेक पंच व सरपंच मौजूद थे।

रेवाड़ी। कोसली अनाज मंडी में ग्रामीणों की समस्याएं सुनते विधायक अनिल कुमार यादव। फोटो : हरिभूमि

आईजीयू के विद्यार्थियों ने किया हार्ट फुलनेस मेडिटेशन सेंटर का शैक्षणिक भ्रमण

रेवाड़ी। भ्रमण के दौरान सेंटर में मौजूद शिक्षक व विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

मीरपुर। इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग की ओर से विद्यार्थियों के लिए गुरुग्राम स्थित हार्टफुलनेस मेडिटेशन सेंटर के एक दिवसीय शैक्षणिक भ्रमण का आयोजन किया गया। भ्रमण का उद्देश्य छात्रों को ध्यान, मानसिक स्वास्थ्य, भावनात्मक संतुलन और मानव व्यवहार से संबंधित व्यावहारिक अनुभव प्रदान करना था। मनोविज्ञान विभागाध्यक्ष एवं अधिष्ठाता व्यावहारिक और संज्ञानात्मक विज्ञान डा. बिजेंद्र सिंह व विश्वविद्यालय के परीक्षा नियंत्रक डा. विपुल यादव ने हरी झंडी दिखाकर विद्यार्थियों को रवाना किया। इस मौके पर शिक्षाविदों ने कहा कि इस प्रकार के अनुभव मनोविज्ञान विषय की गहरी समझ विकसित करने में सहायक होते हैं। शैक्षणिक भ्रमण का समन्वय विभाग के शिक्षक प्रभारी डा. संदीप कुमार व रोहित कुमार ने किया। छात्रों ने भ्रमण को अत्यंत प्रेरणादायक, ज्ञानवर्धक और व्यावहारिक अनुभवों से भरपूर बताया। विद्यार्थियों ने कहा कि हर्टफुलनेस सेंटर में प्राप्त सीख उनके शैक्षणिक ज्ञान के साथ-साथ व्यक्तिगत विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

बिजली निगम के फोरमैन ने साबी नदी में कूदकर दी जान

- मृतक की ओर से की गई आत्म हत्या के कारणों का अभी पता नहीं चला पुलिस मामले की जांच कर रही

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

शुक्रवार रात्रि बिजली निगम में कार्यरत फोरमैन ने एनएच-48 स्थित साबी नदी मे कूदकर आत्महत्या कर ली। धारूहेड़ा थाना पुलिस ने कर्मचारी के शव को साबी नदी ने निकालने के बाद नागरिक अस्पताल के शवगृह में रखवाया है। पुलिस को 28 नवंबर शुक्रवार की रात को सूचना मिली की साबी नदी के पुल पर एक मोटरसाइकिल खड़ी हुई है, जिसके पास जूते व एक पर्स पड़ा हुआ है। सूचना पर धारूहेड़ा पुलिस मौके पर पहुंची और आसपास तलाश की तो साबी नदी में व्यक्ति का शव मिला। मृतक की पहचान गांव डूंगरवास निवासी 52 वर्षीय हंसराज के रूप में हुई। मृतक बिजली निगम में फोरमैन के पद पर कार्यरत था। पुलिस ने शुक्रवार मध्यरात्रि करीब 2 बजे मृतक के शव को जीएच रेवाड़ी में रखवाया है। मृतक के एक लड़का व एक लड़की है। मृतक की ओर से की गई आत्महत्या के कारणों का अभी पता नहीं चला है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

सरदार पटेल ने किया राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने का काम : जांगड़ा

- कोसली में शनिवार को निकाला यूनिटी मार्च
- विद्यार्थियों सहित अनेक नागरिकों ने लिया भाग

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कोसली

रेवाड़ी। कार्यक्रम में योगकला का प्रदर्शन करते बच्चे, पदयात्रा को हरी झंडी दिखाकर रवाना करते सांसद रामचंद्र जांगड़ा। फोटो : हरिभूमि

लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में देशभर में किए जा रहे यूनिटी मार्च के तहत माई भारत युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार तथा उपमंडल प्रशासन के तत्वावधान में शनिवार को कोसली के राजीव गांधी खेल स्टेडियम से राजकीय आईटीआई संस्थान तक यूनिटी मार्च का आयोजन किया गया। पदयात्रा का उद्देश्य राष्ट्र की एकता, अखंडता और सेवा भावना को सुदृढ़ करना रहा। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में राज्यसभा सांसद रामचंद्र जांगड़ा ने शिरकत की। उनके साथ एसडीएम विजय कुमार यादव, डीएसपी विद्यानंद, भाजपा जिलाध्यक्ष डा. वंदना पोपली, वरिष्ठ भाजपा नेता वीर कुमार यादव व नेहरू युवा केंद्र के जिला प्रभारी सुमित यादव मौजूद थे। इस मौके पर सांसद रामचंद्र जांगड़ा ने कहा कि सरदार वल्लभभाई पटेल ने स्वतंत्र भारत की नींव को मजबूती देने का कार्य किया। उन्होंने 562 रियासतों को एक सूत्र में पिरो कर देश को एक सशक्त राष्ट्र के रूप में स्थापित किया। सरदार पटेल का जीवन इस बात का उदाहरण है कि दृढ़ इच्छाशक्ति और सही दिशा में किए गए प्रयास किसी भी असंभव कार्य को संभव बना सकते हैं। उन्होंने हमेशा समाज में समानता, एकता और समरसता के मूल्यों को बढ़ावा दिया। साबरमती के तट पर निर्मित विश्व की सबसे ऊंची प्रतिमा स्टेच्यू ऑफ यूनिटी सरदार पटेल के अद्वितीय योगदान और उनके एकता संदेश का प्रतीक है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी सरदार वल्लभ भाई पटेल के दिखाए मार्ग पर चलते हुए जम्मू कश्मीर से धारा 370 खत्म करके देश की एकता और अखंडता को और मजबूत करने का सराहनीय कार्य किया है। सांसद जांगड़ा ने लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल के चित्र पर पुष्प अर्पित कर नमन किया।

कार्यक्रम में ये मौजूद रहे

कार्यक्रम में चेयरमैन दुष्यंत सिंह, भाजपा नेता मा. हुकमचंद, भाजपा जिला उपाध्यक्ष बलजीत यादव व प्रवीन शर्मा, महामंत्री हिमांशु पालीवाल व कुलदीप चौहान, जिला पार्षद शारदा यादव, जिला पार्षद जीवन हितैषी, सरपंच रामकिशन जांगड़ा, सरपंच श्याम सिंह, जतिन अरनेजा, बीडीपीओ अनिल यादव, गौरव शर्मा, गोपी डहीना, अनिल भारद्वाज व सरदार बहाला सहित अनेक पंचायत प्रतिनिधि व गणमान्य नागरिक मौजूद थे।

सुबह व शाम के समय प्रदूषण का संकट बरकरार, किसानों को बरसात का इंतजार

दिन व रात के तापमान में मामूली वृद्धि, ठंड का बढ़ रहा असर

- दिन में तेज धूप निकलने से अभी लोगों को राहत मिल रही

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

नवंबर के अंतिम सप्ताह में मौसम कड़ाके की ठंड की ओर अग्रसर हो चुका है। हांलाकि दिन व रात के तापमान में मामूली उतार-चढ़ाव चल रहा है। शहर में सुबह व शाम प्रदूषण का संकट भी बरकरार है, जिससे लोगों को सांसों के संकट का सामना करना पड़ रहा है। शनिवार को सुबह से ही धूप निकलने से आसमान में साफ रहा। सुबह के समय प्रदूषण का धुआं वातावरण में छाया रहा। अधिकतम तापमान 1 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि के साथ 24.5 डिग्री पर पहुंच गया। न्यूनतम तापमान में भी 0.9 डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतरी दर्ज की गई। रात का तापमान 9.5 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। गत वर्ष 29 नवंबर को अधिकतम तापमान 26 डिग्री और न्यूनतम 8.5 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया था। सुबह और शाम के समय ठंड असर दिखा रही है। दिन में तेज धूप निकलने से अभी लोगों को राहत मिल रही है। मौसम विभाग के अनुसार एक सप्ताह तक मौसम शुष्क बना रहेगा। आसमान साफ रहने से दिन और रात के तापमान में उतार-चढ़ाव जारी रहेगा। दिसंबर के पहले सप्ताह के बाद कड़ाके की ठंड का असर देखने को मिलेगा। बीते वर्ष दिसंबर माह के दूसरे पखवाड़े में अच्छी ठंड पड़ी थी। कुछ दिनों तक बरसात होने की कोई संभावना नहीं है।

रेवाड़ी। शनिवार को सुबह शहर में छाया स्मॉग। फोटो : हरिभूमि

एक्यूआई का स्तर 360 पर पहुंचा

जिले में रबी की प्रमुख फसलों सरसों और गेहूं का तेजी से विकास हो रहा है। ये मौसम दोनों फसलों के लिए अनुकूल माना जा रहा है। इस समय अगेती फसलों को सिंचाई की आवश्यकता है। किसानों के लिए नलकूपों से दोनों फसलों की एक साथ सिंचाई करना मुश्किल बना हुआ है। इस समय किसानों को बरसात का बेसब्री से इंतजार हैं। इस समय अगर बरसात होती है, तो दोनों फसलों का अच्छा उत्पादन होने की संभावना है। शनिवार को सुबह धारूहेड़ा का एक्यूआई 360 के आसपास रहा, जबकि दोपहर बाद यह कम होकर 311 पर आ गया।

शकूरबस्ती दिल्ली-जैसलमेर के लिए नई रेलसेवा शुरू, नियमित संचालन कल से

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

रेलवे की ओर से यात्रियों की सुविधा के लिए शकूरबस्ती दिल्ली-जैसलमेर- शकूरबस्ती जैसलमेर एक्सप्रेस नई रेलसेवा का संचालन शनिवार से शुरू किया गया। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने शनिवार को जैसलमेर स्टेशन से उद्घाटन स्पेशल ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। नियमित रेलसेवा गाड़ी संख्या 12249 शकूरबस्ती दिल्ली-जैसलमेर प्रतिदिन 1 दिसंबर से शकूर बस्ती से शाम 5:10 बजे रवाना होकर अगले दिन सुबह 9 बजे जैसलमेर पहुंचेगी। गाड़ी संख्या 12250 जैसलमेर-शकूरबस्ती प्रतिदिन सुपरफास्ट एक्सप्रेस रेलसेवा 2 दिसंबर से जैसलमेर से शाम 5 बजे रवाना होकर अगले दिन सुबह 9:30 बजे शकूरबस्ती पहुंचेगी। यह रेलसेवा मार्ग में दिल्ली कैंट, गुरुग्राम, रेवाड़ी, अलवर, दौसा, जयपुर, फुलेरा, नावां सिटी, कुचामन सिटी, मकराना, डेगाना, मेडता रोड, जोधपुर, ओसियां, मरवाड लोहावट, फलौदी, रामदेवरा व आशापुर गोमट स्टेशनों पर ठहराव करेगी। इस रेलसेवा में 1 फर्स्ट एसी, 1 सैकेंड एसी, 2 थर्ड एसी, 6 द्वितीय शयनयान, 4 साधारण श्रेणी, 1 गार्ड डिब्बा व 1 पॉवरकार सहित कुल 16 डिब्बे होंगे।

नवंबर में जरूरी कामों को निपटाएं, 1 दिसंबर से नियम बदलेंगे

नवंबर महीना जल्द खत्म होने वाला है और कई सरकारी और वित्तीय कामों की आखिरी तारीख भी पास आ गई है। अगर आपने अभी तक ये काम पूरे नहीं किए हैं, तो 30 नवंबर से पहले पूरा कर लें। 1 दिसंबर से कई नियम बदल जाएंगे।

सरकारी कर्मचारियों के लिए यूपीएस चुनने की आखिरी तारीख

- सरकारी कर्मचारियों के लिए यूनिफाइड पेंशन स्कीम चुनने की डेडलाइन 30 नवंबर है। पहले यह तारीख 30 सितंबर थी, लेकिन बाद में बढ़ा दी गई। यूपीएस, एनपीएस से अलग है और इसे चुनने का मौका सीमित समय तक ही है।
- पेंशनर्स के लिए लाइफ सर्टिफिकेट जमा करने की डेडलाइन
- पेंशनर्स को अपना लाइफ सर्टिफिकेट 30 नवंबर तक जमा करना होगा। इसे समय पर जमा न कराने पर पेंशन रोकने का खतरा हो सकता है।

टैक्स फाइलिंग और जरूरी रिपोर्ट

- अक्टूबर 2025 में टीडीएस कटने वाले टैक्सपेयर्स को सेक्शन 194-Iए, 194-Iबी, 194एम और 194एस के तहत बयान 30 नवंबर तक जमा करना अनिवार्य है। सेक्शन 92ई के तहत रिपोर्ट देने वाले टैक्सपेयर्स भी 30 नवंबर तक आईटीआर फाइल कर सकते हैं। अंतरराष्ट्रीय ग्रुप की कॉन्स्टीट्यूएंट एंटिटीज़ के लिए फॉर्म 3सीईएए जमा करने की आखिरी तारीख भी यही है।

एलपीजी सिलेंडर की कीमत में बदलाव

- ऑयल मार्केटिंग कंपनियां हर महीने की पहली तारीख को एलपीजी की कीमतें अपडेट करती हैं। 1 दिसंबर को भी नए दाम लागू होंगे। 1 नवंबर को 19 किलो वाले कॉमर्शियल सिलेंडर की कीमत 6.50 रुपए तक घटाई गई थी।

एविएशन टरबाइन फ्यूल की कीमत

- एलपीजी की तरह एटीएफ की कीमतों में भी हर महीने बदलाव होता है। 1 दिसंबर को एटीएफ के दाम बढ़ सकते हैं या कम हो सकते हैं। नवंबर खत्म होने से पहले इन जरूरी कामों को पूरा करना बेहद जरूरी है, क्योंकि 1 दिसंबर से नियम और तारीखें बदल जाएंगी।

स्टॉक मार्केट की नब्ज पकड़ना नहीं आसान, इन बातों का रखें विशेष ध्यान

निवेश मंत्रा
विनोद गौतम

दरअसल अनिश्चितता से भरे शेयर ट्रेडिंग में भावों के उतार-चढ़ाव को समझना ही सबसे बड़ी चुनौती होती है। जो ट्रेडर यह समझते हैं कि मुनाफा कमाना बड़ा लक्ष्य है, वे अक्सर घाटा खाते हैं, जबकि भावों की भाषा को पढ़ने वाले कुल मिलाकर फायदे में रहते हैं, क्योंकि किसी भी शेयर के भावों में ही छिपा रहता है उसका भूत, वर्तमान और भविष्य, बस इसे पढ़ने के लिए सधी और पैनी नजर चाहिए। अब सवाल है कि भावों की भाषा पढ़ी कैसे जाए। इसका एक प्रमुख माध्यम है टेक्निकल एनालिसिस।

टेक्निकल एनालिसिस का क्या है अर्थ

टेक्निकल एनालिसिस का अर्थ है किसी स्टॉक के मार्केट डाटा का सूक्ष्म अध्ययन करके उसकी संभावित कीमत का अनुमान लगाना। इसमें मुख्य रूप से दो बातों पर गौर किया जाता है। भाव और ट्रेडिंग की मात्रा यानी वॉल्यूम। सरल शब्दों में कहा जाए तो टेक्निकल एनालिसिस के तहत देखा जाता है कि किसी खास समय अवधि में किसी स्टॉक की कीमत में कितना उतार-चढ़ाव आया। इस अवधि में इसकी ट्रेड की गई संख्या में क्या कभी कोई बड़ा उतार चढ़ाव देखने को मिल रहा है।

नियमित व अनुशासित निवेश ही करें

इक्विटी मार्केट में निवेश एक अनुशासन है। इसे तोड़ने पर जोखिम उठाना पड़ सकता है। लेकिन यह देखा गया है कि निवेश के फैसलों में अपवाद को नियम मान लेने की चूक कई लोगों करते हैं। मसलन, आम धारणा है कि इक्विटी फंड में एकमुश्त निवेश नहीं करना चाहिए। इक्विटी फंड में निवेश एसआईपी के जरिये करना चाहिए, ताकि समय के साथ लागत की एवरेजिंग होती रहे। ऐसा करने के कई फायदे हैं। फिर भी, कई लोगों के पोर्टफोलियो इस नियम का पालन नहीं करते हैं और वे इसकी वजहें भी बताते हैं कि मुझे एक बार में यह रकम मिली थी और किसी ने मुझे बताया कि इसे एकबार में ही इस फंड में लगा देना चाहिए या मुझे पता है कि सेक्टर फंड्स से अभी परहेज करना चाहिए, लेकिन यह तो साफ दिख रहा है कि इंफ्रास्टक्चर का हाल बेहतर होने वाला है, तो मैंने इंफ्रा फंड में एक बार में ही मोटी रकम लगा दी या इक्विटी में उतार-चढ़ाव होता रहता है, लिहाजा मैंने एफडी में 10 साल के लिए यह रकम लगा दी। ये तो एफडी की तरह ही हैं। ये तमाम तर्क टिपिकल हैं और इनमें से ज्यादातर मामलों में निवेशक ने सोच-समझकर निवेश नियमों का उल्लंघन करने का निर्णय किया होता है। वे ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि वे खुद को अपनी तर्क बुद्धि से या सलाहकार की मदद से यह समझा ले जाते हैं कि मौजूदा हालात में आम नियम का रास्ता छोड़ना फायदेमंद होगा।

ऐसे समझें

निवेश में अनुशासन व नियमों को समझने के लिए यहां एक उदाहरण पेश है। अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा का एक डॉक्यूमेंट है। 'पावर ऑफ टेन' के नाम से। इसे नासा के कंप्यूटर साइंटिस्ट गेरार्ड होल्जमैन ने तैयार किया था। इसमें सेफ्टी-क्रिटिकल सॉफ्टवेयर डिवप्प करने के 10 नियम बताए गए हैं। इसके रिसर्च के दौरान होल्जमैन ने पाया था कि अगर नियमों का पालन किया जाए, तो उन्हें कानून की तरह मानना होगा, न कि दिशानिर्देश की तरह। और कुछ ही नियमों का होना बेहतर है, जिनका कभी उल्लंघन न हो। निवेश पर यह उदाहरण बिल्कुल फिट बैठता है। कहने का मतलब कि निवेश के नियमों में अपवाद की कोई जगह नहीं है। हमेशा बुनियादी नियमों का पालन करना चाहिए। और यह नियम है कि इक्विटी में कभी भी एकमुश्त निवेश नहीं करें। न ही सीधे शेयर बाजार में और न ही म्यूचुअल फंड में। अपने पोर्टफोलियो में विविधता रखें, एसआईपी अपनाएं, नियमित निवेश का पैटर्न अपनाएं। कभी कभार हो सकता है कि ऐसे हालात बनें, जिनमें निवेश के बुनियादी नियमों के उल्लंघन से बेहतर रिटर्न मिले, लेकिन ऐसे मामले नाममात्र के ही होते हैं।

ट्रेडिंग के जरूरी सूत्र

1. ट्रेडर के लिए सबसे अहम है भावों की भाषा
2. टेक्निकल एनालिसिस से समझें भावों की धड़कन
3. टेक्निकल एनालिसिस में चार्ट का अध्ययन अहम
4. ट्रेडर को प्राइस व वॉल्यूम का आकलन करना चाहिए
5. टेक्निकल एनालिसिस से ट्रेंड अनुमान लगा सकते हैं

टेक्निकल व फंडामेंटल एनालिसिस में अंतर

फंडामेंटल एनालिसिस में जहां हम लंबे निवेश के नजरिए से कंपनी के अतीत और वर्तमान को कसौटी पर कसने की कोशिश करते हैं, वहीं टेक्निकल एनालिसिस मूल रूप से भावों की तात्कालिक गणना पर आधारित पद्धति है। इसका उद्देश्य ट्रेडर की मदद करना होता है। फिर चाहे वह ट्रेडर इंट्रा डे हो या फिर शॉर्ट टर्म ट्रेडर। फंडामेंटल एनालिसिस में हम कंपनी की आय, उसके द्वारा दिए गए लाभांश और शोध जैसी बातों को अपने अध्ययन का आधार बना सकते हैं।

ऐसे करें एनालिसिस

टेक्निकल एनालिसिस में इनमें से कुछ संकेतकों का उपयोग किया जा सकता है लेकिन इसमें मुख्य रूप से कुछ विशेष टूल्स और तकनीक का इस्तेमाल किया जता है। इन विशेष साधनों में एक है चार्ट का अध्ययन। चार्टों के जरिए टेक्निकल एनालिसिस करने वाला ट्रेडर दो अहम चीजों पर ध्यान देता है- पहला प्राइस मूवमेंट और दूसरा शेयर का ट्रेंड। अगर कोई शेयर आपके द्वारा निर्धारित कीमत से दो फीसदी गिर भी जाता है तो मुमकिन है कि वह अपट्रेंड हो। यानी उसमें मुनाफा वसूली या किसी और वजह से थोड़े वक्त के लिए करेक्शन आया हो लेकिन वह जल्द ही फिर से रफ्तार पकड़ सकता है। टेक्निकल एनालिसिस के जरिए हम समझने की कोशिश करते हैं कि किस सीमा के बाद कोई शेयर दिशा बदल सकता है।

कई तरह के चार्ट पैटर्न

टेक्निकल एनालिसिस में काम आने वाले चार्ट पैटर्न भी कई तरह के होते हैं। जैसे- हेड एंड शोल्डर, डबल टॉप या बॉटम वगैरह। इसके अलावा जो चीज टेक्निकल एनालिसिस में बहुत महत्वपूर्ण मानी जाती है, वह है मूविंग एवरेज। मूविंग एवरेज पर अलग से चर्चा करेंगे, फिलहाल हम आपको उसका एक परिचय देते चलें। मूविंग एवरेज का अर्थ है कि कोई शेयर किसी खास अवधि में किस औसत भाव के साथ मूव कर रहा था। इसका आकलन लगाने में हम कुछ और तकनीकी बिंदुओं पर गौर कर करते हैं, जैसे, सपोर्ट और रेजिस्टेंस। टेक्निकल एनालिसिस के जरिए शेयर के भावों का अर्थशास्त्र समझने में मदद मिलती है।

शेयर बाजार में क्या है अपर सर्किट और लोअर सर्किट?

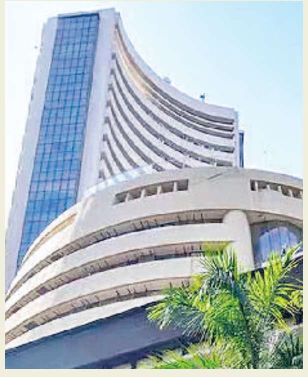

क्यों घटता-बढ़ता है शेयर का मूल्य?

सामान्य निवेशक इस बात को लेकर कभी कभी बहुत हैरान रहते हैं कि शेयर का मूल्य किस हिसाब से बढ़ता और घटता रहता है। शेयर का मूल्य दो कारणों से बढ़ता या घटता रहता है। पहला कारण शेयर की सप्लाई और डिमांड और दूसरा कारण कंपनी द्वारा मुनाफा कमाना या कंपनी का घाटा। लेकिन, अगर हम स्टॉक ट्रेडिंग में देखें तो शेयर की सप्लाई और डिमांड की वजह से अधिकतर शेयर का मूल्य घटता बढ़ता रहता है। जब भी शेयर की डिमांड बढ़ती है यानी ज्यादा लोग खरीदते हैं तो उसका दाम बढ़ जाता है। और, जब लोग शेयर को बेचना स्टार्ट कर देते हैं तब शेयर का मूल्य घटने लगता है यह इस तरह से काम करता है।

लोअर सर्किट को ऐसे समझें

मान लीजिए आपके पास किसी कंपनी का शेयर हैं। किसी वर्ष के दौरान उस कंपनी को किसी कारणवश घाटा लगना शुरू हो जाता है। ऐसे में आप उस कंपनी का शेयर बेचने लगेंगे। ऐसे ही बहुत से लोग जो उस कंपनी के शेयर को लिए होंगे वह भी बेचना शुरू कर देंगे। जब सब बेचना शुरू कर देंगे तो एक ही दिन में उस कंपनी का शेयर शून्य तक पहुंच सकता है। ऐसी स्थिति में शेयर का मूल्य एक निश्चित सीमा तक गिरे इसके लिए एमएसई तथा बीएसई स्टॉक एक्सचेंज ने कुछ नियम बनाए हैं। जिनके अंतर्गत जब किसी कंपनी में अचानक सब लोग शेयर बेचना शुरू कर दें तो एक निश्चित सीमा तक ही उस शेयर का मूल्य घटेगा। उसके बाद उस शेयर की ट्रेडिंग बंद हो जाएगी। यह जो मूल्य घटने की सीमा है, उसे ही लोअर सर्किट कहते हैं।

कैसे काम करता है अपर सर्किट

अपर सर्किट को एक उदाहरण के जरिए समझते हैं। मान लीजिए कि आपके पास किसी कंपनी के शेयर हैं। उस कंपनी को खूब मुनाफा होता है या किसी कारणवश उस कंपनी में निवेशकों की रूचि बढ़ जाती है। ऐसे में उस कंपनी के शेयर का दाम खूब चढ़ने लगता है। ऐसे में किसी कंपनी के शेयर का मूल्य एक ही दिन में आसमान में पहुंच जाएगा। इसी हालत से बचने के लिए शेयर बाजार में अपर सर्किट का प्रावधान है। उस निश्चित मूल्य सीमा तक उस कंपनी के शेयर का दाम पहुंचते ही उसमें अपर सर्किट लग जाएगा और उसकी ट्रेडिंग बंद हो जाएगी। जिस तरह से लोअर सर्किट पर 10, 15 और 20 फीसदी का नियम लागू होता है, वही नियम अपर सर्किट पर भी लागू होता है। लोअर सर्किट के तीन चरण होते हैं। यह 10 फीसदी, 15 फीसदी और 20 फीसदी की गिरावट पर लगता है। यदि 10 फीसदी की गिरावट दिन में 1 बजे से पहले आती है, तो बाजार में एक घंटे के लिए कारोबार रोक दिया जाता है। इसमें शुरुआती 45 मिनट तक कारोबार पूरी तरह रुका रहता है और 15 मिनट का प्री-ओपन सेशन होता है।

क्या आपके पीएफ अकाउंट में भी सितंबर-अक्टूबर का कंट्रीब्यूशन नहीं दिख रहा

उन सैलरीड कर्मचारियों को चिंता करने की जरूरत नहीं है जिनके पीएफ पासबुक में सितंबर और अक्टूबर 2025 की सैलरी से कटे पैसे अभी तक नहीं दिख रहे हैं। कर्मचारी भविष्य निधि संगठन ने कहा है कि ये सिर्फ एक अस्थायी तकनीकी दिक्कत है, जल्दी ठीक हो जाएगी। ईपीएफओ अपना नया और अपग्रेडेड इलेक्ट्रॉनिक चालान-कम-रिटर्न सिस्टम लॉन्च कर रहा है। इसलिए हाल के महीनों की पीएफ एंट्री फेज में डाली जा रही हैं। इसी वजह से कुछ लोगों की पासबुक में सितंबर-अक्टूबर के पैसे अभी गायब या अधूरे दिख रहे हैं।

पासबुक लाइट से होगी आसानी

बता दें कि ईपीएफओ ने हाल ही में 'पासबुक लाइट' नाम की नई सुविधा शुरू की है। इसमें आप देख सकते हैं कि आपके खाते में कितना पैसा जमा हुआ, कितना निकला और अभी कितना बचा हुआ है। मतबल जरूरी जानकारी के लिए आसान सुविधा शुरू की गई है। ये सुविधा मेंबर पोर्टल पर ही उपलब्ध है। इसके लिए अलग से पासबुक वाली वेबसाइट पर जाने की जरूरत नहीं पड़ती। साथ ही इससे ट्रैफिक ज्यादा होने पर भी सिस्टम हैंग भी नहीं होता और जल्दी जानकारी मिल जाती है।

ई-सेवा पोर्टल पर पीएफ पासबुक कैसे चेक करें

- यूएएन मेंबर ई-सेवा पोर्टल पर जाएं।
- अपना यूएएन, पासवर्ड डालें और ओटीपी से लॉगिन करें।
- डैशबोर्ड पर 'पासबुक लाइट' चुनें, वहां से स्टेटमेंट देखें या डाउनलोड करें।

उमंग ऐप पर पासबुक कैसे देखें

- उमंगऐप में लॉगिन करें।
- ईपीएफओ सर्विस सर्च करें और 'व्यू पासबुक' पर क्लिक करें।
- यूएएन डालें, ओटीपी से वेरीफाई करें, अपना मेंबर आईटी चुनें और ई-पासबुक डाउनलोड कर लें।

ऑनलाइन पीएफ क्लेम करने के लिए क्या-क्या चाहिए

- ऑनलाइन क्लेम डालने वाले मेंबर्स को ये चीजें पहले से पूरी करनी जरूरी हैं:
- यूएनएन एक्टिवेट होना चाहिए और उससे जुड़ा मोबाइल नंबर काम कर रहा हो।
- आधार लिंक और ओटीपी से वेरीफाई होना चाहिए।
- बैंक अकाउंट डिटेल्स ईपीएफओ में अपडेट होनी चाहिए।
- अगर सर्विस 5 साल से कम है और फाइनल सेटलमेंट करना है तो पेन भी लिंक होना चाहिए।

जैसे-जैसे ईपीएफओ नया सिस्टम पूरी तरह लागू करेगा, सितंबर-अक्टूबर 2025 के पीएफ पैसे जल्दी ही सभी की पासबुक में दिखने लगेंगे।

यूपीआई वेरिफिकेशन से लेकर 'स्पॉट ए स्कैम' टूल तक, निवेशकों को फ्रॉड से बचाने के लिए सेबी के सुझाव

भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) के चेयरमैन तुहिन कांत पांडेय ने निवेशकों की सुरक्षा को मजबूत करने की जरूरत बताई। उन्होंने आगाह किया कि नॉन-रजिस्टर्ड एडवाइजर ग्रुप, लोगों को असुरक्षित कारोबारी माध्यम की ओर आकर्षित कर रहे हैं और इसलिए अवैध कारोबार के मामले नए डिजिटल प्रारूपों में फिर से सामने आ रहे हैं। बीएसई के एक कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि इस दौर में जहां गलत सूचनाएं तथ्यों से अधिक तेजी से प्रसारित होती हैं, यह चुनौती और भी बढ़ गई है। उन्होंने कहा कि इसलिए, निवेशक सुरक्षा को मजबूत करना नियामक की प्रमुख प्राथमिकता बन गया है। योजनाओं की पहचान करने में और अधिक सहायता करने के लिए 'स्पॉट ए स्कैम टूल' पेश किया है, जो यूजर्स की ऑनलाइन प्रामाणिकता सत्यापित करने में मदद करता है। पांडेय ने बताया कि सेबी ने पिछले 18 महीनों में मेटा, गूगल, टेलीग्राम और एक्स सहित सोशल मीडिया एवं सर्च मंचों पर गैरकानूनी या भ्रामक ऑनलाइन सामग्री के एक लाख से अधिक मामलों को चिह्नित किया है। उन्होंने कहा कि इसके अनुरूप विनियमित संस्थाओं को सोशल मीडिया पर अनियमित सलाहकारों के साथ जुड़ने की अनुमति नहीं है, जिससे झूठे दावों व हानिकारक पेशकशों के प्रसार को रोकने में मदद मिलेगी।

यूपीआई से जुड़ा एक मान्य ढांचा पेश किया

सेबी ने इन प्रयासों के तहत यूपीआई से जुड़ा एक मान्य ढांचा पेश किया है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि पेमेंट सिर्फ सेबी रजिस्टर्ड मध्यस्थों की प्रामाणिक यूपीआई आईडी पर ही किए जाएं। बाजार नियामक ने जांच सुविधा का भी विस्तार किया गया है जिससे निवेशक 'सेबी इन्वेस्टर' वेबसाइट और सारथी मोबाइल ऐप पर बैंक खातों की वास्तविकता की तुरंत पुष्टि कर सकते हैं। यह समझते हुए कि धोखाधड़ी की गतिविधि बिना किसी चेतावनी के हो सकती है निवेशक अब स्वेच्छा से अपने लेनेदने के खातों को 'फ्रीज' या 'ब्लॉक' कर सकते हैं। यह ठीक वैसे ही है जैसे 'हैक' किए गए डेबिट कार्ड को 'ब्लॉक' किया जाता है। यह विकल्प तत्काल सुरक्षा प्रदान करने के लिए बनाया गया है।

गारंटीड रिटर्न के वादे से रहें सावधान

कारोबार संबंधी धोखाधड़ी वाले ऐप विश्वसनीय लगते हैं, डिजिटल खाते वैधता का दिखावा करते हैं और पक्के रिटर्न का वादा करने वाली ऐसा योजनाएं पेश करते हैं जो कोई भी रेगुलेटेड मार्केट नहीं दे सकता। बाजार नियामक के प्रमुख ने खतरे की गंभीरता को दोहराते हुए कहा कि ऐसे "नॉन-रजिस्टर्ड एडवाइजर ग्रुप, लोगों को असुरक्षित ट्रेड प्लेटफॉर्म की ओर आकर्षित करते हैं और इसलिए अवैध कारोबार के मामले नए डिजिटल प्रारूपों में फिर से सामने आ रहे हैं। उन्होंने कहा कि अवैध कारोबार के मामले कोई छिटपुट घटनाएं नहीं हैं, बल्कि निवेशकों के विश्वास, जिज्ञासा और आकांक्षाओं का फायदा उठाने के समन्वित प्रयास हैं। इसलिए यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि लोग 'अवसर की आड़ में धोखे' का शिकार न हों।

अलर्ट हर साल गुजरना पड़ता है इस प्रक्रिया से, जानकारी होना जरूरी

डिजिटल लाइफ सर्टिफिकेट स्वीकार हुआ या नहीं, इस चिंता में हैं? ऐसे चुटकियों में करें चेक

पेंशन जारी रखने के लिए सालाना लाइफ सर्टिफिकेट जमा करना एक जरूरी काम होता है। लेकिन, बहुत से बुजुर्गों की सबसे बड़ी चिंता यही रहती है कि उनका डिजिटल लाइफ सर्टिफिकेट बैंक या पेंशन डिपार्मेंट ने एक्सेप्ट कर लिया या नहीं। नीचे हम जानेंगे कि यह पूरा सिस्टम कैसे काम करता है, इसमें क्या-क्या जानकारी देनी पड़ती है। साथ ही इसमें सबसे जरूरी काम यह पता करना होता है कि आपका सर्टिफिकेट एक्सेप्ट हो गया या नहीं। लाइफ सर्टिफिकेट एक आधार आधारित डिजिटल सर्टिफिकेट है। इससे पेंशन लेने वाले व्यक्ति के जीवित होने की पुष्टि हो जाती है, वो भी बिना बैंक या डिपार्टमेंट के चक्कर लगाए। जैसे ही आप इसे बनाते हैं, यह इलेक्ट्रॉनिक तरीके से आपके पेंशन देने वाले बैंक या डिपार्टमेंट तक पहुंच जाता है। हर सर्टिफिकेट का एक अलग प्रमाण-आईडी नंबर होता है, जिससे आप और डिपार्टमेंट दोनों उसकी स्थिति देख सकते हैं।

डिजिटल लाइफ सर्टिफिकेट बनाते समय आपको ये जानकारी डालनी होती है

⏭ आधार नंबर और नाम ⏭ रजिस्टर्ड मोबाइल नंबर ⏭ पेंशन पेमेंट ऑर्डर नंबर ⏭ पेंशन खाते का नंबर और बैंक का नाम ⏭ पेंशन मंजूर करने वाले डिपार्टमेंट और पेंशन देने वाले बैंक/डिपार्टमेंट का नाम ⏭ इसके बाद फिंगरप्रिंट, आंख की स्कैन या चेहरे की पहचान (बायोमेट्रिक) देनी जरूरी है। अगर कोई भी जानकारी गलत हुई तो सर्टिफिकेट रिजेक्ट हो सकता है। इसलिए बहुत ध्यान से भरें, क्योंकि 30 नवंबर की डेडलाइन नजदीक है।

चेहरे की पहचान से कैसे बनाएं सर्टिफिकेट

अगर आप फेस ऑथेंटिकेशन तरीका इस्तेमाल करना चाहते हैं तो आपके पास एंड्रॉयड फोन होना चाहिए। दो ऐप डाउनलोड करें **adhaarFaceRD** और **Jeevan Pramaan Face App**।

आगे ये करें : आधार से वेरीफाई करें, पेंशन की सारी डिटेल भरें साफ-साफ अपना चेहरा फोटो खिंचवाएं, काम पूरा होने पर आपके रजिस्टर्ड, मोबाइल पर मैसेज आएगा और डाउनलोड लिंक भी मिल जाएगा।

सबसे जरूरी: पता करें कि आपका सर्टिफिकेट एक्सेप्ट हुआ या नहीं, सर्टिफिकेट जमा करने के बाद यह जरूर चेक करें कि बैंक/डिपार्टमेंट ने उसे मंजूर किया है या नहीं। तरीका बहुत आसान है। ऑफिशियल वेबसाइट **jeevanpramaan.gov.in** पर जाएं, अपना प्रमाण-आईडी डालकर सर्टिफिकेट डाउनलोड करें, सर्टिफिकेट के सबसे नीचे मैसेज देखें, अगर लिखा हो कि पीडीए ने एक्सेप्ट कर लिया, मतलब काम हो गया।

अगर रिजेक्ट लिखा हो तो तुरंत नया सर्टिफिकेट सही जानकारी और बायोमेट्रिक के साथ बनवाएं।

अगर दिसंबर से पहले सही सर्टिफिकेट जमा नहीं हुआ तो पेंशन रुक सकती है। इसलिए अभी समय है, आज ही चेक कर लें और जरूरत पड़े तो दोबारा जमा कर दें।

पारिवारिक वसीयत में सही हिस्सा नहीं मिला? जानें, क्या है कानून और कोर्ट में क्या माना जाता है सबूत

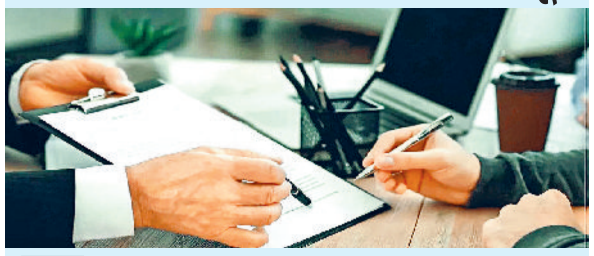

परिवार में वसीयत को लेकर झगड़े अक्सर रिश्तों को बिखेर देते हैं। अगर वसीयत में हिस्से बराबर न हों या लगे कि कोई बाहर से दखल दे रहा था, तो मामला और उलझ जाता है। लेकिन कानून के मुताबिक, सिर्फ असमानता देखकर वसीयत को चुनौती नहीं दी जा सकती। यहां बहुत मजबूत सबूत चाहिए। अगर परिवार पहले से ही सही कदम उठाएं, तो लंबी अदालती लड़ाई और पैसे की बर्बादी से बच सकते हैं। खैतान एंड कंपनी की पार्टनर ज्योति सिन्हा बताती हैं कि ऐसे मामलों में सही जानकारी होना जरूरी है, वरना छोटी-छोटी बातें नजरअंदाज हो जाती हैं।

छिपे हुए संकेत जो नजर नहीं आते

परिवार वाले अक्सर उन छोटे-छोटे इशारों को मिस कर देते हैं, जो वसीयत में गड़बड़ी की ओर इशारा करते हैं। सिन्हा कहती हैं कि अगर कोई फायदा उठाने वाला शख्स लंबे समय से टेस्टेटर (वसीयत बनाने वाला) के करीब रहा हो और फैसले प्रभावित करने की कोशिश करता दिखे, तो ये दबाव या अनुचित प्रभाव का संकेत हो सकता है। इसके अलावा, वसीयत में हस्ताक्षर में कुछ असामान्य हो, जैसे डॉक्टर का सर्टिफिकेट न होना जो दिमागी हालत की पुष्टि करे, या जहां काट-पीट हुई हो वहां इनिशियल्स न हों, तो ये चेतावनी के घंटे हैं। ये चीजें खुद-ब-खुद वसीयत को अमान्य नहीं बनातीं, लेकिन जांच की जरूरत बताती हैं। सिन्हा की सलाह है कि इन पर गौर करके जल्दी कदम उठाएं, क्योंकि वक्त बीतने पर सबूत गुम हो सकते हैं।

सबूत जुटाने की जल्दबाजी क्यों?

समय बहुत कीमती है ऐसे मामलों में। सिन्हा कहती हैं कि वसीयत बनाने के वक्त की घटनाओं का टाइमलाइन बनाएं, टेस्टेटर की शारीरिक और मानसिक स्थिति के बारे में जानकारी इकट्ठा करें। असली हस्ताक्षर के नमूने, फोटो, चिट्ठियां या ईमेल जैसे दस्तावेज रखें, जो ये साबित करें कि वसीयत प्राकृतिक है या संदिग्ध। परिवार अक्सर सोचते हैं कि उनके पास जो कागज हैं, वो बेकार हैं, लेकिन सिन्हा की राय है कि सब कुछ वकील को दिखाएं। वो तय करेंगे कि क्या काम आएगा। अगर देर की, तो महत्वपूर्ण चीजें खो सकती हैं।

अदालतें कैसे काम करती हैं?

जज लोग वसीयत पर दस्तखत करते वक्त की परिस्थितियों को गौर से जांचते हैं। सिन्हा बताती हैं कि क्या टेस्टेटर आजाद था, उसे सब समझ आ रहा था? बीमारी, नशा या कोई ऐसी चीज जो फैसले पर असर डाले, उसकी जांच होती है। अनुचित प्रभाव साबित करना काफी मुश्किल है, क्योंकि कानूनी स्तर ऊंचा है।

अगर वसीयत से बाहर कर दिया गया तो?

वसीयत से नाम कटना अकेले चुनौती का आधार नहीं होता। सिन्हा कहती हैं कि पहले देखें कि बिना वसीयत के संपत्ति कैसे बंटती। अगर कोई कानूनी वारिस 'अप्राकृतिक बहिष्कार' का दावा करता है, तो वो सेल्फ-अक्वायर्ड संपत्ति के लिए मुश्किल से मान्य होता है, लेकिन पैतृक संपत्ति के लिए काम कर सकता है। ऐसे में कोई कदम उठाने से पहले वकील से बात जरूर करें, क्योंकि मामला जटिल है।

खबर संक्षेप

चोरी के आरोप में पुलिस ने 4 युवकों को पकड़ा

कनीना। कनीना के बंद पड़े इंजीनियरिंग कॉलेज भवन में कंप्यूटर की एलसीडी, मॉनिटर व एल्युमीनियम का दरवाजा, खिड़की चोरी करने के आरोप में पुलिस ने चार युवकों को राउंडअप किया है। जिनकी पहचान मनो, साहिल, आतिश, मोहित वासी कनीना के रूप में हुई है। चोरों से सामान भी बरामद किया गया है।

हैप्पी स्कूल में फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता आयोजित

महेंद्रगढ़। हैप्पी स्कूल एवरग्रीन स्कूल में फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें कक्षा तीसरी से पांचवीं के विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। छोटे-छोटे बच्चों ने अपनी रंग-बिरंगी और रचनात्मक वेशभूषा के माध्यम से समाज को कई प्रेरणादायक संदेश दिए। किसी ने सामाजिक जागरूकता का महत्व बताया, तो किसी ने तले-भुने पदार्थों के सेवन से बचने का संदेश दिया।

सैदपुर निवासी विजय सिंह का निधन

मंडी अटेली। अटेली बीडीपीओ कार्यालय से रिटायर्ड गांव सैदपुर निवासी विजय सिंह का 78 वर्ष की आयु में निधन हो गया। विजय सिंह ने पंचायत विभाग में 25 वर्षों से अधिक सेवा देकर ग्राम पंचायतों व सरपंचों को बड़ा सहयोग किया। उनके बेटे महेश सैन ने बताया कि उनकी बैठक गांव सैदपुर में हो रही है। वह अपने पीछे तीन लड़के, एक लड़की समेत भरापूरा परिवार छोड़ कर चले गए हैं।

आईटीआई मैदान में 1 दिसंबर तक दिखेगा कला एवं संस्कृति का रंग

मंत्रोच्चारण के बीच अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव का भव्य शुभारंभ

गीता के श्लोकोच्चारण से गीतामय हुआ वातावरण
गीता विषाद से विजय तक ले जाती है: एडीसी

नारनौल। गीता महोत्सव का शुभारंभ करते अतिरिक्त उपायुक्त उदय सिंह व सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

एडीसी ने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को कर्मयोग का जो दिव्य संदेश दिया वह आज भी मानव के लिए प्रेरणा स्रोत है।

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नारनौल

मंत्रोच्चारण व पवित्र ग्रंथ गीता के पूजन के बीच शनिवार को अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव के उपलक्ष्य में जिला स्तरीय गीता महोत्सव का भव्य शुभारंभ हुआ। इसके साथ ही चारों तरफ पवित्र ग्रंथ गीता के श्लोकोच्चारण से समस्त वातावरण गीतामय हो उठा। अतिरिक्त उपायुक्त उदय सिंह ने मुख्य अतिथि के तौर पर गीता यज्ञ में पूर्ण आहुति डाली और कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस मौके पर नगराधीश डॉ. मंगल सेन भी मौजूद थे। इस महोत्सव में विभिन्न स्कूलों व कॉलेजों से आई लोक कलाकारों की टीमों ने हरियाणवी वेशभूषा में सुसज्जित होकर गीता थीम पर सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विवि से अंजू दीदी, हरियाणा केंद्रीय विवि के प्रोफेसर आनंद शर्मा व जीओ गीता से मास्टर सुरेश कुमार ने गीता पर अपने व्याख्यान दिए। नागरिकों को गीता पर्व की बधाई देते हुए एडीसी उदय सिंह ने कहा कि सरकार के प्रयासों से गीता जयंती को अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव का दर्जा मिला है। यह हमारे लिए गर्व की बात है। भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को कर्मयोग का जो दिव्य संदेश दिया वह आज भी मानव के लिए प्रेरणा स्त्रोत है। गीता विषाद से विजय तक ले जाती है। जीओ गीता परिवार के सदस्यों ने गीता स्थापना करवाई। आयुर्वेद अधिकारी डॉ. शशिबाला, बीजेपी जिला उपाध्यक्ष वासुदेव यादव, लोक संस्कृति प्रकोष्ठ से डॉ. कृष्णा यादव, माई भारत के जिला युवा अधिकारी नित्यानंद यादव, माता सती वेलफेयर समिति नारनौल के अध्यक्ष सिकंदर गहली के अलावा अन्य अधिकारी भी मौजूद थे।

वाद्य यंत्रों की धुन पर नाच उठे युवा

आईटीआई परिसर में चल रहे जिला स्तरीय गीता महोत्सव में आध्यात्मिक ज्ञान के साथ हरियाणा की लोक संस्कृति का अद्भुत संगम देखने को मिल रहा है। महोत्सव में प्रवेश करते ही आगंतुकों का स्वागत जिस पारंपरिक और मनमोहक तरीके से किया जा रहा है वह हर किसी को भाव विभोर कर रहा है। बीन, डेरु और डफ की पारंपरिक त्रिवेणी से निकलती मधुर धुनें पूरे वातावरण में एक उत्सव का संचार कर रही हैं। इन वाद्य यंत्रों पर बजने वाली सुंदर सुर लहरियों को सुनकर आगंतुक भी अपने आप को रोक नहीं पा रहे हैं और वे भी नाचने को मजबूर हो जाते हैं। आईटीआई में चल रहे तीन दिवसीय जिला स्तरीय गीता महोत्सव के दूसरे दिन 30 नवंबर रविवार को हवन यज्ञ के बाद प्रदर्शनी व सेमिनार 10:15 बजे व सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन 11:15 बजे किया जाएगा। इस कार्यक्रम में महेंद्रगढ़ के विधायक कंवर सिंह यादव मुख्य अतिथि के तौर पर शिरकत करेंगे।

गीता थीम पर आधारित प्रस्तुति देकर शमां बांधा

आईटीआई में चल रहे गीता महोत्सव के दौरान विभिन्न स्कूलों की सांस्कृतिक टीमों ने गीता थीम पर आधारित प्रस्तुति देकर कार्यक्रम को और उल्लासपूर्ण बना दिया। इस अवसर पर सरस्वती विद्या मंदिर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय नांगल चौधरी, एमआर मित्रपुरा, एमआर अटेली, एसडी ककराला, सीएल पब्लिक स्कूल व आरपीएस स्कूल के छात्राओं ने सांस्कृतिक प्रस्तुति दी।

प्रदर्शनी में निखर रहा हुनर व स्वावलंबन

आईटीआई में चल रहा जिला स्तरीय गीता महोत्सव हरियाणा की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और जीवंत हस्तकला का भव्य मंच बना हुआ है। यहां स्वयं सहायता समूहों की महिला उद्यमियों के स्वावलंबन की कहानी भी दिखाई दे रही हैं। यहां पारंपरिक हस्तकला व पाककला देखने को मिल रही है। इस वर्ष प्रदर्शनी में स्वयं सहायता समूहों की भागीदारी विशेष रूप से प्रेरणादायक है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के वोकल फॉर लोकल और आत्मनिर्भर भारत के सपने यहां साकार होते दिख रहे हैं। आईटीआई में चल रहे गीता महोत्सव के दौरान जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, कृषि विज्ञान केंद्र, जिला बागवानी विभाग, आयुष विभाग, महिला एवं बाल विकास विभाग, राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, पंजाब नेशनल बैंक ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान नसीबपुर, स्वास्थ्य विभाग, जिला रेडक्रॉस समिति, नागरिक संसाधन सूचना विभाग, जिला अक्षय ऊर्जा विभाग के अलावा जीओ गीता, रिचा क्राफ्ट अटेली, जय श्रीश्याम स्वयं सहायता समूह अमरपुर जौरासी, एचडीएफसी बैंक परिवर्तन सहगल फाउंडेशन, चंदन श्रम भविष्य निधि योजना, जय श्री श्याम नांगल काठा स्वयं सहायता समूह, नारी शक्ति स्वयं सहायता समूह बचीनी, प्रगतिशील टैगोर स्वयं सहायता समूह बवानिया, बालाजी महिला स्वयं सहायता समूह बवानिया, खुशहाल महिला ग्राम संगठन कुंजपुरा, अम्मा पूजा स्वयं सहायता समूह कांटी, नया सवेरा महिला स्वयं सहायता समूह राता कलां, जय माता दी महिला स्वयं सहायता समूह कटकई व सार्थक महिला ब्लॉक संगठन सिहमा की ओर से स्टाल लगाई गई।

श्रीकृष्णा स्कूल में वार्षिक खेलकूद स्पर्धा शुरू

हरिभूमि न्यूज ▶▶ महेंद्रगढ़

महेंद्रगढ़। खेलकूद प्रतियोगिता में दमखम दिखाते खिलाड़ी। फोटो : हरिभूमि

श्रीकृष्णा स्कूल में दो दिवसीय वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता का शुभारंभ किया गया। मुख्यातिथि चेयरमैन डॉ. बीरसिंह यादव व विशिष्ट अतिथि सीईओ कर्मवीर राव, डॉ. कविता राव उपस्थित रही, जबकि अध्यक्षता प्राचार्य रवि प्रकाश ने की। खेल प्रशिक्षक महीपाल यादव व उत्तम सिंह ने बताया कि प्रतियोगिता में वॉलीबाल, कबड्डी, एथलेक्टिस, योगा तथा फन खेल, शॉर्ट पुट, लौंग जंप, म्यूजिकल चेयर व रस्सा कस्सी खेलों का आयोजन किया गया। खेलकूद प्रतिस्पर्धा में मुख्यातिथि के आगमन पर चेयरमैन डॉ. बीरसिंह यादव, सीईओ कर्मवीर राव व डॉ. कविता राव का प्राचार्य द्वारा बुक्का भेंटकर स्वागत किया तथा अतिथियों द्वारा ध्वजारोहण कर सलामी दी। कार्यक्रम में मंच संचालन संजीव कुमार ने किया।

लड़कों की दौड़ में 100 मी. में प्रिंस प्रथम, छविकांत ने दूसरा व यश ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। 200 मी. में नितेश प्रथम, कार्तिक ने दूसरा व कुशल ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। वहीं लड़कियों की 100 मी. दौड़ में भावन प्रथम, माही ने दूसरा व वर्षा ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। वहीं 200 मी. में अंशु ने प्रथम, रेणु ने द्वितीय व संगीता ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। वहीं 400 मी. लडकों की दौड़ में हर्ष प्रथम, दीपांशु ने दूसरा व कृष, ओम ने तीसरा स्थान प्राप्त किया।

राव जयराम स्कूल में हुई गणित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

महेंद्रगढ़। अटेली रोड स्थित राव जयराम स्कूल में कक्षा छठी से 12वीं तक की एक गणित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिता का आयोजन विद्यालय के गणित विभाग द्वारा किया गया। इस दौरान मंच संचालन अनीता यादव एवं नवीन यादव ने किया। निर्णायक मंडल की जिम्मेदारी शक्ति सिंह एवं विभांशु ने निभाई तथा मुख्य अतिथि के रूप में प्राचार्य नरेंद्र कुमार उपस्थित रहे। प्रतियोगिता में विद्यालय की अलग अलग हाउस से तीन टीमों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में दस दस अंक के कुल पांच राउंड थे, जिसमें रविंद्रनाथ टैगोर हाउस से लोकश, ऋतिक, रितेश, साहिल एवं रिया ने 46 अंक के साथ प्रथम स्थान प्राप्त किया, सुभाष चंद्र बोस हाउस से रिया, गौरव, सोनम, पार्थ एवं सुमित ने 43 अंक के साथ दूसरा स्थान प्राप्त किया। प्राचार्य नरेन्द्र यादव ने बताया कि इस प्रतियोगिता में सभी हाउस के बच्चो ने एक दूसरे को बहुत नजदीकी से मात दी। इस प्रकार की प्रतियोगि से बच्चो में सम्बंधित विषय के प्रति रूचि बढ़ती है तथा उस विषय का बारीकी से ज्ञान होता है। आज का युग प्रतिस्पर्धा का युग है तथा आपसी प्रतिस्पर्धा से ही विद्यार्थी की पढ़ाई का आधार मजबूत होता है। प्राचार्या ने विजेताओं को पुरूस्कार देकर सम्मानित किया।

बीआर स्कूल के संस्थापक की 16वीं पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि सभा आयोजित

हरिभूमि न्यूज ▶▶ महेंद्रगढ़

महेंद्रगढ़। विद्यालय में हवन करते हुए। फोटो : हरिभूमि

बीआर स्कूल सेहलंग के संस्थापक स्व. राजेंद्र भारद्वाज की 16वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में विद्यालय परिसर में हवन-यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई। कार्यक्रम में पंडित सतनारायण जोशी ने वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ हवन संपन्न करवाया तथा संस्थापक की आत्मा की शांति के लिए आशीर्वचन दिए। इस दौरान स्व. भारद्वाज के बड़े भाई एवं पूर्व हेडमास्टर जगदीश प्रसाद, उनकी पत्नी सुशीला देवी, तथा उनके पुत्र हरीश भारद्वाज, कृष्ण भारद्वाज और पंकज भारद्वाज सहित समस्त बीआर स्टाफ उपस्थित रहा। सभी ने संस्थापक के चित्र पर पुष्पार्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी और उनके शिक्षा-सेवा के योगदान को याद किया। पंडित सत्यनारायण जोशी ने कहा कि स्व. राजेंद्र भारद्वाज ने शिक्षा को सेवा माना और समाज को ज्ञान का प्रकाश देने में अपना संपूर्ण जीवन समर्पित किया। चेयरमैन हरीश भारद्वाज ने कहा कि संस्थापक राजेंद्र भारद्वाज ने जिस सपने के साथ बीआर शिक्षण समूह की नींव रखी थी।

सतनाली मंडी। विद्यार्थियों को साइबर क्राइम के बारे में जागरूक करते एएसआई इंद्रजीत सिंह। फोटो : हरिभूमि

साइबर क्राइम के बारे में किया जागरूक

सतनाली मंडी। राजकीय महाविद्यालय में साइबर क्राइम ब्रांच नारनौल व हरियाणा सहकारी विभाग की ओर से महत्वपूर्ण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता प्राचार्य जरनैल सिंह ने की। कार्यक्रम में एएसआई इंद्रजीत सिंह, साइबर क्राइम ब्रांच नारनौल ने विद्यार्थियों को मोबाइल द्वारा होने वाले अपराधों के बारे में जानकारी देकर जागरूक किया। हरियाणा सहकारी विभाग की ओर से आयोजित व्याख्यान में युवाओं के लिए रोजगार के अवसर विषय पर जानकारी दी गई। मुख्य वक्ता देवेन्द्र सिवाच, पंचकूला व परविन्द्र सिंह चरखी दादरी ने हरियाणा सहकारी विभाग की ओर से चलाए जा रहे स्वरोजगार के अभियान की जानकारी दी। प्राचार्य जरनैल सिंह ने बताया कि कार्यक्रम का उद्देश्य लोगों को साइबर क्राइम के प्रति जागरूक करना और उन्हें इसके रोकथाम के लिए प्रेरित करना था। इस मौके पर डॉ. रेखा शेखावत, डॉ. हरिओम, डॉ. विपिन, संजय कुमार, राकेश कुमार मौजूद रहे।

मौलिक अधिकारों की दी जानकारी

नारनौल। राव नेतराम पब्लिक स्कूल सलीमपुर में एनसीसी की बटालियन के कैडेट्स ने जारूरकता सप्ताह अभियान में हिस्सा लिया। इस अवसर पर विद्यालय प्राचार्य अनिता देवी ने बताया कि एनसीसी बटालियन के निर्देशानुसार विद्यालय में जागरूकता सप्ताह अभियान चलाया जा रहा है। जिसमें विद्यालय के एनसीसी कैडेट्स विभिन्न गतिविधियों में भाग ले रहे है। इसी कड़ी में शनिवार को कैडेट्स को मौलिक अधिकारों के बारे में बताया गया। जिसमें आरटीआई, मानव मौलिक अधिकार, शिक्षा का अधिकार आदि की जानकारी दी गई। उन्होंने बताया कि एनसीसी की ओर से इस प्रकार की गतिविधियों से कैडेट्स को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करना है। इस मौके पर सीटीओ विक्रम सिंह उपस्थित रहे।

स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव के कार्यकाल को बताया ऐतिहासिक

हरिभूमि न्यूज ▶▶ महेंद्रगढ़

युवा इंकलाब संगठन ने स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव के उत्कृष्ट कार्यों, बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं के विस्तार और जनहित में लिए गए महत्वपूर्ण निर्णयों के लिए आभार प्रकट किया है। संगठन के अध्यक्ष कुलदीप सुरजनवास ने कहा कि मंत्री द्वारा स्वास्थ्य विभाग की कमान संभालने के बाद से प्रदेश में स्वास्थ्य सेवाओं में लगातार उल्लेखनीय सुधार दर्ज किए गए हैं। संगठन ने बताया कि पिछले एक वर्ष के कार्यकाल में मंत्री आरती सिंह राव ने कई महत्वपूर्ण परियोजनाओं को स्वीकृति दिलाई है, जिनका लाभ आने वाले वर्षों तक प्रदेश की जनता को मिलता रहेगा। महेंद्रगढ़ के अस्पताल को 50 से 100 बैड तक, नारनौल अस्पताल को 200 बैड तक और गुरुग्राम के अस्पताल को 600 बैड तक अपग्रेड करने के फैसले ने क्षेत्रीय स्वास्थ्य ढांचे को मजबूत आधार प्रदान किया है। इसी प्रकार पटीकरा आयुर्वेदिक चिकित्सालय में 100 सीटों के बीएएमएस कोर्स तथा कोरियावास मेडिकल कॉलेज में 100 सीटों पर एमबीबीएस की स्वीकृति मिलना भविष्य की दृष्टि से बेहद महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जा रही है। युवा इंक़लाब संगठन ने मंत्री के औचक निरीक्षणों की भी सराहना की। संगठन के अनुसार मंत्री द्वारा समय-समय पर अस्पतालों का निरीक्षण कर व्यवस्था सुधारने और मरीजों से संवाद स्थापित करने के प्रयासों से स्वास्थ्य सेवाओं में सकारात्मक बदलाव देखने को मिले हैं। कोरियावास मेडिकल कॉलेज का नामकरण शहीद राव तुलाराम के नाम पर करवाने के फैसले को संगठन ने मास्टरस्ट्रोक बताते हुए कहा कि इससे शहीदों का सम्मान बढ़ा है और समाज में लंबे समय से चल रहे मतभेद भी खत्म हुए हैं।

नारनौल। कार्यक्रम में अपनी प्रस्तुति देते विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

सूरज स्कूल में हुआ वार्षिक उत्सव अभिनंदन

नारनौल। सूरज स्कूल में शनिवार को वार्षिक उत्सव अभिनंदन का आयोजन किया गया, जिसमें कक्षा पहली व दूसरी के नन्हे विद्यार्थियों ने अपनी मनमोहक प्रस्तुतियों से सभी का हृदय जीत लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय निदेशिका गायत्री यादव, उप निदेशक आदित्य प्रसाद एवं प्राचार्या द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर की। कार्यक्रम में सबसे पहले स्वागत गीत पर प्रस्तुति दी गई, जिसके बाद रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम की शानदार श्रृंखला शुरू हुई। जिसमें रंगारंग नृत्य, देशभक्ति गीत, नाटक, पारंपरिक प्रस्तुतियां और उद्देश्य आधारित प्रदर्शनों ने मंच को जीवंत कर दिया। बच्चों की आत्मविश्वास से भरी प्रस्तुति कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण रही।कार्यक्रम में बच्चों ने कठपुतली नृत्य, नुक्कड़ नाटक तथा राजस्थान की लोक-संस्कृति की मनमोहक झलक भी प्रस्तुत की। प्रधानाचार्या रितु चहल ने बच्चों और शिक्षकों की मेहनत की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे कार्यक्रम बच्चों के व्यक्तित्व विकास, आत्मविश्वास और कला कौशल को निखारते हैं।

हरियाणा टेलेंट सर्च प्रतियोगिता स्टेज-2 परीक्षा सम्पन्न

नारनौल। एनआईआईटी सेंटर पर शनिवार को हरियाणा टेलेंट सर्च प्रतियोगिता स्टेज-2 की परीक्षा की परीक्षा सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। यह परीक्षा एचकेसीएल हरियाणा नोलेज कारपोरेशन लि. पंचकूला के निर्देशानुसार आयोजित की गई। स्टेज-2 में वही प्रतिभागी शामिल हुए, जिन्होंने स्टेज-1 को सफलतापूर्वक उत्तीर्ण किया था। सेंटर डायरेक्टर नवीन शर्मा ने बताया कि स्टेज-1 परीक्षा के दौरान विद्यार्थियों व स्कूलों में जबरदस्त उत्साह देखने को मिला। शहर के एबीएम, सैनी स्कूल, हरियाणा सीनियर सेकेण्डरी स्कूल सहित अनेक विद्यालयों ने भाग लिया। उन्होंने बताया कि स्टेज-2 के बाद स्टेट लेवल और डिस्ट्रिक्ट लेवल पर टॉप करने वाले विद्यार्थियों का चयन किया जाएगा, जिन्हें एचकेसीएल ओर से कैश प्राइज व मेडल प्रदान किए जाएंगे। सभी प्रतिभागियों को सर्टिफिकेट भी दिया जाएगा।

पायगा गांव में हुआ जिला प्रशासन का रात्रि ठहराव कार्यक्रम

जनस्वास्थ्य विभाग गांव की पेयजल समस्या का जल्द करें समाधान

एडीसी ने ग्रामीणों से किया सीधा संवाद और मौके पर हुई 26 समस्याओं की सुनवाई

हरिभूमि न्यूज ▶▶ महेंद्रगढ़

महेंद्रगढ़। ग्रामीणों की समस्या सुनते एडीसी व एसपी। फोटो : हरिभूमि

जन स्वास्थ्य विभाग पायगा गांव की पेयजल से संबंधित समस्याओं का जल्द से जल्द समाधान करें। यह बात अतिरिक्त उपायुक्त उदय सिंह ने गांव में आयोजित समाधान शिविर व रात्रि ठहराव कार्यक्रम में ग्रामीणों की समस्याएं सुनते समय कही। अतिरिक्त उपायुक्त ने कहा कि हरियाणा सरकार की सुशासन की अवधारणा को धरातल पर उतारने की दिशा में जिला प्रशासन की ओर से रात्रि ठहराव कार्यक्रम का प्रत्येक माह आयोजन किया जा रहा है। इसी कड़ी में गांव पायगा में रात्रि ठहराव कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

अतिरिक्त उपायुक्त उदयभान सिंह, पुलिस अधीक्षक पूजा वशिष्ठ व एसडीएम कनिका गोयल ने न केवल ग्रामीणों की समस्याएं सुनी, बल्कि गांव के विकास से जुड़े ग्रामीणों के सुझावों को भी सुना। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए एडीसी उदय सिंह ने कहा कि रात्रि ठहराव कार्यक्रम केवल एक प्रशासनिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि सरकार का यह संकल्प है कि प्रशासन जनता के द्वार तक पहुंचे और उसकी समस्याओं को समझे। उन्होंने कहा कुछ समस्याएं ऐसी होती हैं जिनका स्थानीय स्तर पर समाधान संभव होता है, ऐसे में ग्रामीण एकजुटता के साथ ग्रामीण विकास में सहभागी बने। उन्होंने ग्रामीणों को आश्वस्त किया कि जिन शिकायतों का निस्तारण प्राथमिकता के आधार पर किया जा रहा है।

कार्यक्रम में पायगा गांव के अलावा आसपास के गांवों से आए ग्रामीणों ने अपनी समस्याएं जैसे सड़क, जल निकासी, बिजली, गलियों का निर्माण इत्यादि समस्याओं पर खुलकर चर्चा की। एडीसी ने मौके पर सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देश देकर कई समस्याओं का तुरंत समाधान कराया। इससे ग्रामीणों में प्रशासन के प्रति विश्वास और गहरा हुआ। कार्यक्रम में 26 ग्रामीणों ने अपनी समस्याएं रखी। रात्रि ठहराव में गांव पायगा निवासी देवव्रत शर्मा के जिला समाज कल्याण विभाग ने मौके पर ही बुढ़ापा पेंशन बनाई।

स्टॉल पर योजनाओं की मिली जानकारी

रात्रि ठहराव कार्यक्रम के दौरान विभिन्न विभागों द्वारा जागरूकता स्टॉल लगाए गए, जिनमें स्वास्थ्य, सामाजिक न्याय, शिक्षा, पशुपालन व बिजली विभाग प्रमुख रहे। एडीसी ने सभी विभागों की सरकार की जनहितकारी नीतियों को दर्शाती प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए आमजन को योजनाओं का लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर नगराधीश मंगलसेन, डीएसपी सुरेश कुमार, तहसीलदार अजय कुमार, खंड विकास एवं पंचायत अधिकारी मनोज कुमार, जिला शिक्षा अधिकारी सुनील दत्त, खण्ड शिक्षा अधिकारी अलका सहित गांव की सरपंच सुनीता देवी तथा विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

खबर संक्षेप

किरायेदारों व नौकरों की वेरिफिकेशन जरूरी : एसपी

रेवाड़ी। पुलिस अधीक्षक हेमेंद्र कुमार मीणा ने कहा कि जिलावासी असामाजिक गतिविधियों पर नियंत्रण पाने के लिए घरों में बाहर से आए हुए किरायेदारों व नौकरों की वेरिफिकेशन कराकर पुलिस का सहयोग करें, क्योंकि कुछ आपराधिक किस्म के व्यक्ति बाहर से आकर अपराध को अंजाम देकर भाग जाते है। एसपी ले कहा कि पुलिस की ओर से किरायेदारों व नौकरों की वेरिफिकेशन के लिए समय-समय पर विशेष अभियान चलाया जाता रहा है। एसपी मीणा ने कहा कि जिले के सभी व्यापारिक संस्थान, औद्योगिक संस्थान, फैक्टियों, ढाबा, रेस्टोरेंट व ठेकेदारों के पास जितने भी बाहरी राज्यों के कर्मचारी हैं, वे उनकी पुलिस वेरिफिकेशन कराकर ही काम पर रखें। सभी ग्राम पंचायतों से भी अपील करते हुए कहा कि गांव में रहने वाले बाहरी अथवा दूसरे राज्य से आकर रह रहे किरायेदारों का सत्यापन अवश्य कराए।

सोने की चेन छीनने का आरोपी अभिरक्षा में

रेवाड़ी। सीआईए रेवाड़ी ने गत 2 जुलाई को मोहल्ला कृष्णा नगर से एक महिला के गले से सोने की चेन छीनने के मामले में एक नाबालिग को अभिरक्षा में लिया है। पुलिस इस मामले में एक आरोपी को पहले ही गिरफ्तार कर चुकी है। मोहल्ला कृष्णा नगर निवासी महिला ने अपनी शिकायत में बताया था कि गत 2 जुलाई को वह शाम के समय अपनी पुत्रवधू के सब्जियां लेने जा रही थी। घर से कुछ दूर चलने के बाद एक बाइक पर सवार दो युवकों में से पीछे बैठे युवक ने उसके गले से सोने की चेन छीन ली और दोनों मौके से फरार हो गए। पुलिस ने मामले में संलिप्त एक आरोपी राजस्थान के गांव रसनाली निवासी विक्रम को पहले ही गिरफ्तार कर लिया था। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से छीनी हुई सोने की चेन भी बरामद कर ली थी। सीआईए ने शुक्रवार को मामले में संलिप्त एक नाबालिग को अभिरक्षा में लिया है। पुलिस ने नाबालिग को जुवेनाइल जस्टिस बोर्ड के समक्ष पेश कर बाल सुधार गृह फरीदाबाद भेज दिया है।

विधायक लक्ष्मण सिंह यादव ने किया जिला स्तरीय गीता महोत्सव का शुभारंभ

शंखनाद के साथ गीता महोत्सव का आगाज, कार्यक्रमों से बांधा समां

- बाल भवन में लगाई गई विभागों की स्टॉलों का किया अवलोकन

हरिभूमि न्यूज ⏭ रेवाड़ी

मॉडल टाउन बाल भवन परिसर में गीता थीम के साथ शनिवार को तीन दिवसीय गीता महोत्सव का भव्य आगाज किया गया। सूचना, जनसंपर्क, भाषा एवं संस्कृति विभाग व जिला प्रशासन के संयुक्त तत्ववावधान में आयोति गीता महोत्सव का शुभारंभ विधायक लक्ष्मण सिंह यादव ने किया। गीता महोत्सव के ओवरऑल इंचार्ज एडीसी राहुल मोदी ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। विधायक लक्ष्मण सिंह ने गीता महोत्सव में लगी विभागों की प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए अवलोकन किया। विधायक ने गणमान्य लोगों के साथ यज्ञ में पूणार्हुति डाली और सांस्कृतिक मंच से गीता पूजन करते हुए दीप प्रज्ज्वलन किया। जिला स्तरीय गीता महोत्सव पूर्ण रूप से गीता के 18 अध्यायों व उनकी शिक्षाओं पर आधारित है, जिससे आमजन को गीता से आधारित बेहतरीन प्रस्तुति देखने को मिल रही है। जिला वासियों ने बाल भवन में पहुंचकर गीता महोत्सव का आनंद लिया।

इस मौके पर विधायक लक्ष्मण सिंह ने कहा कि विश्व के महान ग्रंथ श्रीमद् भागवत गीता को मानवता का कालातीत मार्गदर्शक माना गया है। गीता धार्मिक ग्रंथ के साथ-साथ जीवन प्रबंधन, कर्तव्य पथ और मानव मूल्यों का ऐसा विश्वकोष है, जो हर युग में हमारे सामने नई रोशनी लाता है। उन्होंने कहा कि गीता हमारे ग्रंथों का गौरव ही नहीं, बल्कि भारत की आत्मा है। यह हमें कर्तव्य ही पूज्य है और कर्म ही पूजा है की प्रेरणा देती है। इसलिए हम गीता को पढकर अपने व्यवहार में, अपने निर्णयों में, और अपने राष्ट के प्रति कर्तव्य भाव में उतारे। गीता से हमें जीवन की कैसी भी परिस्थितियों में अपना कर्तव्य करते रहने की प्रेरणा मिलती है।

रेवाड़ी। गीता महोत्सव में कार्यक्रम पेश करते कलाकार तथा राधा-कृष्ण की भूमिका में विद्यार्थी। *फोटो : हरिभूमि*

सेल्फी प्वाइंट बना आकर्षण का केंद्र

बाल भवन में आयोजित गीता महोत्सव के मुख्य द्वार पर बनाए गए आई लव रेवाड़ी व शंखनाद सेल्फी प्वाइंट सभी दर्शकों के लिए आकर्षण का केंद्र बने रहे। सेल्फी प्वाइंट पर दिन भर स्कूली बच्चे, कर्मचारी, अधिकारी, शहर व ग्रामीण क्षेत्र से लोग सेल्फी लेते नजर आए। गीता महोत्सव में प्रतिभागियों ने गीता सार, नृत्य नाटिका, योग, मलखम, भजन, देशभक्ति समूह गान, हरियाणवी समूह गान, एकल अभिनय, समूह नृत्य अभिमन्यु चक्रव्यूह भेदन, भजन, राधे कृष्णा समूह नृत्य, राधा कृष्ण नृत्य, हरियाणवी पॉप, समूह नृत्य नारी शक्ति, रागनी, एकल गायन, कृष्ण अर्जुन संवाद, नृत्य व लघु नाटिका आदि सांस्कृतिक कार्यक्रमों की भव्य प्रस्तुति देकर सबको मंत्रमुग्ध किया। महोत्सव में सूत्रधार की भूमिका कार्यवाहक प्राचार्या डा. ज्योत्सना यादव व प्रवक्ता सुधीर यादव ने निभाई। इस अवसर पर एसडीएम सुरेश कुमार, सीटीएम जितेन्द्र कुमार, डीएसपी जोगेंद्र शर्मा, डीएसपी रविंद्र, डीएसपी सुरेंद्र श्योराण, नगर परिषद चेयरपर्सन पूनम यादव, धारूहेड़ा नगर पालिका चेयरमैन कंवर सिंह, मार्केट कमेटी वाइस चेयरमैन दीपक मंगला, अनिल सैनी, राजीव नागपाल व रंगकर्मी सतीश मस्तान सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति मौजूद थे।

प्रदर्शनी में दिखी हरियाणा के विकास की झलक*

गीता महोत्सव में लगाई जागरूकता प्रदर्शनी में हरियाणा के विकास की झलक साफ दिखाई दी। इसमें सूचना जनसंपर्क, भाषा एवं संस्कृति विभाग के साथ-साथ हमारी विरासत-म्हारा रेवाड़ी, पुलिस विभाग, जिला विधिक सेवाएं प्राधिकरण, शिक्षा विभाग, महिला एवं बाल विकास विभाग, जिला रेडक्रॉस सोसायटी, समाज कल्याण विभाग, जिला खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, बागवानी विभाग, स्वास्थ्य विभाग, खेल एवं युवा कार्यक्रम विभाग, जन स्वास्थ्य विभाग, आयुष विभाग, हैफेड, महिला उद्यमी एवं हस्तकला, जीयो गीता, मृदुल आश्रय, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय, अखिल भारतीय महिला परिषद, आर्य साहित्य केंद्र, वैदिक साहित्य, हथकरघा एवं हस्तशिल्प, गीता ज्योति, नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा विभाग सहित अन्य विभागों और संगठनों की स्टॉल लगाई गई।

रेवाड़ी। गीता महोत्सव में शंखनाद करते हुए आचार्य, प्रदर्शनी का अवलोकन करते विधायक गीता महोत्सव में योगकला का प्रदर्शन करते गुरुकुल के विद्यार्थी तथा कार्यक्रम पेश करती छात्राएं। *फोटो : हरिभूमि*

गीता का संस्कृति, धर्म एवं दर्शन पर गहरा प्रभावः गोयल

हरिभूमि न्यूज ⏭ रेवाड़ी

प्रदेश के राजस्व एवं आपदा प्रबंधन, स्थानीय निकाय और नागरिक उड्डयन मंत्री विपुल गोयल ने बाल भवन में आयोजित जिला स्तरीय गीता महोत्सव का अवलोकन किया। इस मौके पर राजस्व मंत्री विपुल गोयल ने कहा कि गीता एक ग्रंथ ही नहीं, बल्कि बेहतर जीवन जीने का सिद्धांत है, जिसमें सभी सवालों के जवाब हैं।

श्रीमद् भागवत गीता का भारतीय संस्कृति, धर्म एवं दर्शन पर गहरा प्रभाव रहा है। ऐसे में प्रत्येक व्यक्ति को आज गीता के संदेशों को अपने जीवन में अपनाकर बेहतर समाज का निर्माण करना चाहिए। उन्होंने कहा कि गीता हमें कर्म करने की शिक्षा देती है। गीता का सार हर वर्ग, आयु के लोगों के लिए प्रासंगिक है। उन्होंने सभी विशेषकर बच्चों से आह्वान किया कि वे गीता अवश्य पढ़ें। उन्होंने कहा कि योगेश्वर भगवान श्री कृष्ण ने कुरुक्षेत्र में अर्जुन को जो उपदेश दिया था वह केवल अर्जुन के लिए नहीं है, बल्कि पूरी मानवता के लिए है।

मंत्री विपुल गोयल ने श्रीमद भगवत गीता को संसार का महान ग्रंथ बताते हुए कहा कि गीता के एक श्लोक को भी अगर हम सच्चे मन से जीवन आत्मसात कर लें तो अपने जीवन को सफल बना सकते हैं। युवा पीढ़ी को भी गीता जी का नियमित अध्ययन करने के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि जीवन में सफल होने के लिए सभी की भलाई के लिए कार्य करने चाहिए। उन्होने उपस्थित श्रोताओं को गीता के श्लोकों को अपने जीवन में धारण करने का आह्वान किया। इस अवसर पर विधायक लक्ष्मण सिंह यादव, भाजपा जिला अध्यक्ष डा. वंदना पोपली, डीसी अभिषेक मीणा, एसपी हेमेंद्र मीणा, एसडीएम सुरेश कुमार, नगराधीश जितेंद्र कुमार, महामंत्री हिमांशु पालीवाल, नगर परिषद चेयरपर्सन पूनम यादव, नगर पालिका धारूहेड़ा चेयरमैन कंवर सिंह, मार्केट कमेटी वाइस चेयरमैन दीपक मंगला व प्रवीण शर्मा मौजूद थे।

रेवाड़ी। गीता महोत्सव में प्रदर्शनी का अवलोकन करते विपुल गोयल।

गीता महोत्सव के दूसरे दिन आज शहर में निकलेगी भव्य शोभायात्रा

हरिभूमि न्यूज ⏭ रेवाड़ी

जिला स्तरीय गीता महोत्सव के दूसरे दिन जहां बालभवन में सांस्कृतिक मंच सजेगा, वहीं प्रदर्शनी में गीता थीम आधारित जानकारी आमजन तक पहुंचेगी। एडीसी राहुल मोदी ने कहा कि डीसी अभिषेक मीणा के मार्गदर्शन में आयोजित हो रहे तीन दिवसीय गीता महोत्सव का आगाज हो चुका है। रविवार 30 नवंबर व 1 दिसंबर को भी गीता महोत्सव का आयोजन गरिमामयी ढग से किया जाएगा। एडीसी ने बताया कि गीता महोत्सव के दूसरे दिन प्रातःकालीन सत्र का शुभारंभ सुबह 10 बजे भाजपा जिलाध्यक्ष डा.वंदना पोपली करेंगी तथा दोपहर 12 बजे बावल के विधायक डा. कृष्ण कुमार बतौर मुख्य अतिथि नगर शोभायात्रा का शुभारंभ करेंगे। इसके उपरांत गीता पर आधारित विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित होंगे। एडीसी ने बताया कि गीता महोत्सव के अंतिम दिन 1 दिसंबर को समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन होगा। समापन अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में डीसी अभिषेक मीणा शिरकत करेंगे। गीता महोत्सव के समापन अवसर पर सोमवार को शाम के समय बाल भवन परिसर दीपोत्सव की रोशनी से जगमग होगा।

खास बातें

- रविवार 30 नवंबर व 1 दिसंबर को भी गीता महोत्सव का आयोजन गरिमामयी ढग से किया जाएगा
- गीता पर आधारित विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित होंगे

बचपन से ही एनसीसी के माध्यम से अपने आपको योग्य बनाएं विद्यार्थी : ब्रिगेडियर संजय

कुंड। राजकीय माध्यमिक विद्यालय मनेठी में शनिवार को कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस मौके पर ब्रिगेडियर संजय सिंह यादव कहा कि युवाओं के लिए भारतीय सेना में काफी संभावनाएं हैं। उन्होंने कहा कि विद्यार्थी बचपन से ही एनसीसी के माध्यम से अपने आपको योग्य बनाएं। छात्राएं भी ज्यादा से ज्यादा संख्या में सेनाओं के शीर्ष पदों पर जा सकती हैं। भारतीय सेना में महिलाओं को कई तोहफे दिए है। महिलाएं सेना में उच्च अधिकारी भी बन सकतीं हैं। उन्होंने कहा कि एनसीसी के माध्यम से युवा भारतीय सेना में प्रवेश करें। ब्रिगेडियर यादव ने सभी विद्यार्थियों को शिक्षण सामग्री व सर्दी के लिए ट्रैक सूट भी भेंट किए तथा विद्यालय के मिड-डेमील कर्मचारियों को भी स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। विद्यालय के प्राचार्य ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर पंच विनोद सितारा, प्रदीप हेड मास्टर, राहुल यादव एडवोकेट, सतपाल यादव व कैलाश कुमार सहित अन्य गणमान्य लोग मौजूद थे।

देवांशु ने बॉक्सिंग में जीता गोल्ड

रेवाड़ी। सहारनवास रेवाड़ी स्थित सनग्लो इंटरनेशनल स्कूल के कक्षा बारहवीं के छात्र देवांशु ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए चौथी नेशनल आर्मी बॉक्सिंग प्रतियोगिता के अंडर-17 जूनियर वर्ग में स्वर्ण पदक जीतकर अपने जिले और विद्यालय का नाम रोशन किया है। प्रतियोगिता में तीन राउंड आयोजित किए गए। चैंपियनशिप का आयोजन ग्रेटर नोएडा के मलखपुर स्टेडियम में किया गया था। प्रतियोगिता में पंद्रह जिलों ने भाग लिया। इस उपलब्धि पर विद्यालय के अध्यक्ष डा. वीपी यादव व खेल प्रशिक्षकों ने अपनी खुशी व्यक्त करते हुए देवांशु व उसके परिवार को बधाई दी। विद्यालय की निदेशिका शारदा यादव ने विद्यार्थियों को खेलों से बढ़ने वाले आत्मविश्वास व लाभों के बारे में अवगत कराया। उन्होंने विद्यार्थियों को खेलों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। विद्यालय प्रबंधन कमेटी व प्रधानाचार्या गरिमा यादव ने देवांशु को सम्मानित किया।

नेशनल लोक अदालत को लेकर पैनल एडवोकेट व पैरा लीगल वॉलेंटियर की बैठक आयोजित

- एड्स कंट्रोल सोसायटी के सहयोग से रैली निकाली जाएगी

हरिभूमि न्यूज ⏭ रेवाड़ी

हरियाणा राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण पंचकूला के निर्देशानुसार मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी कम जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सचिव अमित वर्मा की अध्यक्षता में शनिवार को जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के पैनल एडवोकेट, मेडिएटर तथा पैरा लीगल वॉलेंटियर की बैठक आयोजित की गई। बैठक में सीजेएम अमित वर्मा ने पैनल एडवोकेट, मेडिएटर तथा पैरा लीगल वॉलेंटियर की कार्य क्षेत्र में आने वाली समस्याओं के बारे में जाना तथा उचित दिशा निर्देश दिए। बैठक में हरियाणा राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण की ओर से भेजी गई मेडिएशन व मेडिटेशन डॉक्यूमेंट्री भी दिखाई गई। इस मौके पर डीएलएसए सचिव अमित वर्मा ने कहा कि 13 दिसंबर को नेशनल लोक अदालत लगाई जाएगी। उन्होंने कहा कि इस लोक अदालत के बारे में ज्यादा से ज्यादा लोगों को जानकारी दी जाए। उन्होंने कहा कि हरियाणा राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण की ओर से दिसंबर माह में यौन वर्कर्स तथा ट्रांसजेंडर के लिए स्वीकार न्याय और सम्मान अभियान चलाया जाएगा ताकि उनको अपने कानूनी अधिकारों की जानकारी तथा सरकार की विभिन्न स्कीमों का लाभ मिल सके। डालसा सचिव अमित वर्मा ने बताया कि हरियाणा राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण पंचकूला के निर्देशानुसार एक दिसंबर को विश्व एड्स दिवस पर सरस्वती कॉलोनी में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की ओर से जागरूकता कैंप का आयोजन किया जाएगा तथा एड्स कंट्रोल सोसायटी के सहयोग से एक रैली भी निकाली जाएगी।

रेवाड़ी। बैठक में जानकारी देते हुए सीजेएम अमित वर्मा। *फोटो : हरिभूमि*

न्यूज डायरी

फेक ब्लड पर विचार गोष्ठी का आयोजन

रेवाड़ी। श्री कृष्ण सीनियर सैकेंडरी स्कूल हांसाका में फेक ब्लड के विषय पर विज्ञान के विद्यार्थियों के लिए विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों को बताया गया कि फिल्मों व धारावाहिकों में जो मारकाट करके पात्रों पर खून दिखाया जाता है, वह वास्तव में खून न होकर टोमैटो सॉस व लाल रंग होता है या फिर विज्ञान में फेरिक क्लोराइड तथा अन्य रासायनिक घोल की अभिक्रिया से ऐसा लाल रंग बनाया जाता है। जब रसायन विज्ञान प्रयोगशाला में विद्यार्थियों से यह अभिक्रिया कराई गई तो इस घोल का इतना गहरा रंग देखकर विद्यार्थी अचंभित हो गए। स्कूल प्राचार्य सुरेश कुमार ने विद्यार्थियों से और भी रासायनिक अभिक्रियाओं के बारे में चर्चा की।

कंपनी ने टीबी से पीड़ित 30 मरीजों को लिया गोद

बावल। राजकीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बावल में शनिवार को प्रधानमंत्री मिशन को आगे बढ़ते हुए निक्षय मित्र पोषण योजना के तहत आयोजित कार्यक्रम में टीबी की बीमारी से पीड़ित 30 रोगियों को पोषण प्रोटीन युक्त किट वितरित की गई। इन टीबी रोगियों को बावल आईएमटी स्थित कंसाई नैरोलैक पेंट्स कंपनी ने सीएसआर फंड के तहत 6 महीने के लिए गोद लिया है। सीएचसी बावल की सीएमओ एवं मुख्य चिकित्सा सीमा यादव ने कहा कि बावल क्षेत्र की विभिन्न कंपनियों व समाजसेवी को चाहिए कि कि वे बीमारियों से पीड़ित टीबी रोगियों की मदद के लिए आगे आए। बावल क्षेत्र में टीबी बीमारी से पीड़ित 400 लोग चिन्हित किए गए हैं। इस अवसर पर कंपनी के प्लांट हैड जीवन जोशी, रामपाल यादव, एचआर हेड रविंद्र कुमार, डा. विनीता व डा. रामनिवास उपस्थित थे।

कार्यक्रम कंप्यूटर साइंस एवं इंजीनियरिंग विभाग की ओर से साइबर सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

बढ़ती डिजिटल गतिविधियों के कारण जागरूकता और सतर्कता आज की प्रमुख आवश्यकता: प्रो.श्योराण

हरिभूमि न्यूज ⏭ मीरपुर

इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय के कंप्यूटर साइंस एवं इंजीनियरिंग विभाग की ओर से साइबर सुरक्षा विषय पर एक दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता शैक्षणिक मामले प्रोफेसर सुनील कुमार ने कहा कि डिजिटल युग में साइबर सुरक्षा शिक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण है और इस प्रकार के कार्यक्रम विद्यार्थियों को नई तकनीकों के प्रति सजग बनाते हैं।

उन्होंने कहा कि साइबर जागरूकता अब हर छात्र की मूल आवश्यकता बन चुकी है। उन्होंने विद्यार्थियों को डिजिटल अनुशासन और सुरक्षित ऑनलाइन व्यवहार अपनाने की सलाह दी। कार्यक्रम की शुरूआत में संयोजक एवं नोडल अधिकारी प्रो. सविता श्योरण ने सेमिनार के उद्देश्य एवं महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने छात्रों को साइबर अपराधों की नवीन प्रवृत्तियों, डेटा सुरक्षा और ऑनलाइन खतरों के प्रति जागरूक किया। उन्होंने बताया कि बढ़ती डिजिटल गतिविधियों के कारण जागरूकता और सतर्कता आज की प्रमुख आवश्यकता है।

मुख्य वक्ता साइबर थाना एसएचओ फूल कुमार ने डिजिटल अरेस्ट, फिशिंग, फर्जी लिंक, पहचान चोरी और ऑनलाइन ठगी जैसे मामलों के वास्तविक उदाहरण साझा किए। उन्होंने छात्रों को मजबूत पासवर्ड, टू-फैक्टर ऑथेंटिकेशन और संदिग्ध संदेशों से बचने जैसे सुरक्षा उपायों को अपनाने की सलाह दी। उन्होंने विद्यार्थियों को साइबर अपराध से संबंधित विस्तृत जानकारी वाला एक पैम्फलेट भी प्रदान किया।

रेवाड़ी। सेमिनार में जानकारी देते हुए वक्ता। **फोटो : हरिभूमि**

विद्यार्थियों का आभार व्यक्त किया

सेशन के दौरान सब-इंस्पेक्टर प्रिंस सोनी ने छात्रों को विभिन्न मोबाइल ऐप्स और वेबसाइटों की जानकारी दी, जिनके माध्यम से साइबर अपराध की रिपोर्ट दर्ज की जा सकती है तथा तुरंत कार्रवाई सुनिश्चित की जा सकती है। इन प्लेटफॉर्म्स की मदद से विद्यार्थी अपने मोबाइल नंबर की सुरक्षा, संदिग्ध गतिविधियों की पहचान और ऑनलाइन धोखाधड़ी की शिकायत आसानी से कर सकते हैं। उन्होंने सोशल इंजीनियरिंग और ऑनलाइन धोखाधड़ी की पहचान करने के आसान तरीके साझा किए। वक्ताओं ने बताया कि छोटी-सी सावधानी बड़े साइबर हमलों से बचा सकती है। उन्होंने बताया कि किसी भी साइबर फ्रॉड की स्थिति में राष्ट्रीय साइबर हेल्पलाइन नंबर 1930 पर तुरंत कॉल करके शिकायत दर्ज कराई जा सकती है। इस मौके पर साइबर क्राइम की टीम के साथ एएसआई चरण सिंह एवं हेड कांस्टेबल अमरजीत भी उपस्थित थे। मंच संचालन डा. रीना हुड्डा ने किया। डा. अशोक कुमार ने सभी अतिथियों, वक्ताओं, संकाय सदस्यों और विद्यार्थियों का आभार व्यक्त किया।

बाल महोत्सव : पुरस्कार वितरण समारोह कल

रेवाड़ी। जिला बाल कल्याण परिषद की ओर से एक दिसंबर को दोपहर 2 बजे बाल भवन में जिला स्तरीय बाल महोत्सव के विजेताओं के पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया जाएगा। बाल महोत्सव में गत 13 अक्टूबर से 30 अक्टूबर तक साहित्यिक, सांस्कृतिक, कला, संगीत, नृत्य, अभिनय, वाद-विवाद, भाषण तथा रचनात्मक अभिव्यक्ति से जुड़ी कई प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं, जिनमें जिले के 11 सरकारी व 62 निजी विद्यालयों के 2442 विद्यार्थियों ने भाग लिया था। सोमवार को डीसी व प्रधान जिला बाल कल्याण परिषद् अभिषेक मीणा विजेताओं को प्रशस्ति पत्र व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित करेंगे। समारोह में 125 प्रथम पुरस्कार, 125 द्वितीय पुरस्कार, 189 तृतीय पुरुस्कार व 448 सांत्वना पुरस्कार सहित 927 विजेता बच्चों सम्मानित किया जाएगा।

मौसमी फ्लावरों से महकेंगे बावल खंड के स्कूल

बावल। राजकीय माध्यमिक विद्यालय भूड़ला में आयोजित फ्लॉवर मैन ऑफ इंडिया के नाम से विख्यात सिरसा जिले के गांव दडबी निवासी व मृदुल आश्रय संस्था के डा. रामजी जयमल बावल खंड ही नहीं, संपूर्ण हरियाणा राज्य के विभिन्न शिक्षण संस्थानों में सर्दी के मौसम में अलग-अलग किस्मों के तैयार फूलों के पौधे वितरित कर रहे है। खंड शिक्षा अधिकारी बावल राजबाला ने कहा कि मृदुल आश्रय संस्था के बैनर तले बावल खंड के सभी विद्यालयों को मौसमी फूलों के पौधों से गुलजार किया जाएगा। शनिवार को डा. रामजी जयमल ने भूड़ला स्कूल में पौधे वितरित किए। कार्यक्रम की अध्यक्षता स्कूल के मौलिक अध्यापक सतबीर ने की। कार्यक्रम में बावल खंड के विभिन्न विद्यालयों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। मंच संचालन संगवाड़ी विद्यालय की प्रवक्ता डा. अनिता यादव ने किया। इस अवसर पर भूडला की सरपंच नेहा, रामौतार, खूबराम, चिराग पहलवान, मुख्य अध्यापक अनिल कुमार, रवि व राजीव परिस्थित थे।

अमित स्वामी को मिला मेडल ऑफ एक्सीलेंस

रेवाड़ी। वर्ल्ड बॉडी बिल्डिंग एवं फिसीक स्पोर्टस फैडरेशन के एंबेसडर व जिम एसोसिएशन के जिला अध्यक्ष अमित स्वामी को वर्ल्ड बॉडी बिल्डिंग एवं फिसीक स्पोर्टस फैडरेशन की ओर से मेडल ऑफ एक्सीलेंस तथा गोल्ड मेडल से सम्मानित किया गया है। स्वामी को यह सम्मान वर्ल्ड बॉडी बिल्डिंग एवं फिसीक स्पोर्टस फैडरेशन द्वारा भेजा गया है। अमित स्वामी पिछले लगभग तीन दशकों से भारत एवं विश्व भर में बॉडी बिल्डिंग एवं फिसीक स्पोर्टस के उत्थान, विकास, प्रचार व प्रसार के लिए प्रयासरत हैं। स्वामी ने यह सम्मान संस्था के पदाधिकारियों व सदस्यों के साथ सांझा किया। इस अवसर पर हरचंद जांगड़ा, सोनू यादव, सुरेश कुमार, खुशी राम गौड़, जितेन्द्र कुमार, गौरव, धर्मवीर, रामू चौधरी, बाबी, संजय कुमार, चेतन, अजीत सिंह, ईश्वर पहलवान व संजय यादव उपस्थित थे। सभी ने अमित स्वामी को सम्मान प्राप्ति पर बधाई दी।

हरिभूमि रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक, रविवार 30 नवंबर 2025

सुदृढ़ संचार व्यवस्था हो या सामरिक सुरक्षा का मामला, कृषि उत्पादन में बढ़ोतरी की बात हो या प्राकृतिक आपदाओं का पूर्वानुमान लगाना हो, इन सबके लिए स्पेस टेक्नोलॉजी में नित नई ऊंचाई छूना जरूरी है। इस दिशा में इसरो निरंतर अग्रसर है। यही नहीं विश्व की स्पेस सुपर पावर बनने के लिए भी इसरो के पास कई इंपॉर्टेंट प्रोजेक्ट्स और प्लानिंग्स हैं। इन सभी पर एक विस्तृत नजर।

अंतरिक्ष में नई ऊंचाई छूने के लिए निरंतर अग्रसर इसरो

कवर स्टोरी
संजय श्रीवास्तव

इसरो द्वारा तीन साल के भीतर अंतरिक्षयान निर्माण की तीन गुनी क्षमता का लक्ष्य निर्धारण, भारत की अंतरिक्ष महत्वाकांक्षा का पूर्वाभास है। यदि यह हासिल हो जाता है, तो भारतीय अंतरिक्ष एजेंसी भी न सिर्फ नासा और यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी के समानांतर खड़ी होगी बल्कि विश्व अंतरिक्ष बाजार में भी वह बहुत बड़ी खिलाड़ी बन जाएगी।

देश की प्रगति के लिए जरूरी: भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन, इसरो का अगले तीन वर्षों में अपने अंतरिक्षयान निर्माण क्षमता को तिगुना करने का फैसला, देश की बदलती सामरिक, वैज्ञानिक और आर्थिक प्राथमिकताओं के पूर्वाभास सरीखा है। इसरो चाहता है कि खुद को अंतरिक्ष के क्षेत्र में भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप ढाल सके, ताकि वो निजी कंपनियों की तेज भागीदारी और अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष प्रतिस्पर्धा के बीच अविलंब आगे आ सके। उसकी यह पहल, देश को विश्व की अग्रणी अंतरिक्ष शक्तियों की श्रेणी में ऊपरी स्थान दिलाने की दिशा में एक रणनीतिक विस्तार है। अंतरिक्ष यान निर्माण क्षमता को बढ़ाना कई वजहों से जरूरी है। 5जी से बढ़कर 6जी की ओर बढ़ना है, तो सैकड़ों छोटे उपग्रहों को अंतरिक्ष में भेजना ही होगा। पृथ्वी अवलोकन और जलवायु निगरानी उपग्रहों की मांग भविष्य में बहुत ज्यादा बढ़ेगी।

वैश्विक शक्ति बनने की है सामर्थ्य: वैश्विक अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था में उपग्रहों और उनकी सेवाओं की मांग अभूतपूर्व तरीके से बढ़ रही है। संचार, अर्थ ऑब्जर्वेशन, रक्षा, निगरानी, नेविगेशन, आपदा प्रबंधन, कृषि और ऊर्जा क्षेत्रों में उपग्रहों की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण होने के चलते आने वाले दशक में हजारों नए उपग्रह लॉन्च होने की उम्मीद है।

भारत के पास सस्ता, तेज, कुशल और विश्वसनीय अंतरिक्ष अभियान संचालन की बेहतर क्षमता है, इसको पूरी दुनिया जान और मान रही है। तमाम देश इसके लिए भारत की ओर आकर्षित भी हैं। लेकिन अंतरिक्ष यान निर्माण-क्षमता के सीमित होने के कारण देश बेहतरीन कौशल होने के बावजूद इस तेजी से बढ़ती वैश्विक मांग का पूरा लाभ नहीं उठा पा रहा। इसरो अभी सालाना औसतन 6 से 7 अंतरिक्षयान बनाता है। तीन साल बाद क्षमता तीन गुना होने का मतलब है कि वह 18 से 21 अंतरिक्षयान प्रति वर्ष तैयार कर सकेगा। फिर उसके पास अन्य देशों के उपग्रहों के लांच के लिए न सिर्फ पर्याप्त यान होंगे बल्कि उन्हें लांच के लिए विंडो भी। कम समय अंतराल पर होने और निर्माण तथा लांच सुविधाएं सीमितता के चलते इसरो के कई प्रक्षेपण कार्यक्रम आपस में ओवरलैप करते हैं। इसरो द्वारा उत्पादन वृद्धि के साथ सैटेलाइट इंटीग्रेशन सेंटर्स की संख्या बढ़ाना इस ओवरलैप को कम करेगा। अंतरिक्षयानों की संख्या में वृद्धि भारत को वैश्विक प्रक्षेपण सेवाओं के बड़े बाजार में मजबूत प्रतिस्पर्धी बनाएगा, जहां आज

अमेरिका की स्पेस-एक्स जैसी निजी कंपनियां लगभग एकछत्र राज कर रही हैं।

संभावनाएं-क्षमताएं हैं भरपूर: आज भारत, वैश्विक अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था में केवल 2 प्रतिशत हिस्सेदारी रखता है, इसरो इसे 2030 तक 8 फीसद तक ले जाने के लक्ष्य पर काम कर रहा है। क्षमता विस्तार, निजी साझेदारी और नई तकनीकों का विकास इसे संभव बना सकता है। बेशक इससे भारतीय अर्थव्यवस्था में बढ़ोतरी दर्ज होगी और संबंधित क्षेत्र में साख भी बढ़ेगी। असल में इसरो की रणनीति महज अपने अंतरिक्ष यानों की संख्या बढ़ाने तक सीमित नहीं है। इस दौर में जब देश में कई स्पेस स्टार्टअप तेजी से उभर रहे हैं, इसरों की प्लानिंग है कि अंतरिक्षयान निर्माण में तमाम बड़ी निजी कंपनियों जैसे लार्सन एंड टुब्रो, गोदरेज, एचएएल, भारत इलेक्ट्रॉनिक्स, स्काईरूट, अग्निकुल, ध्रुव स्पेस तथा अन्य छोटे

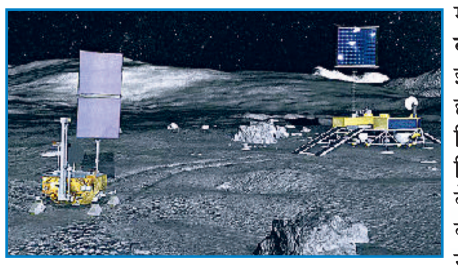

स्टार्टअप्स को भी वह इस काम में बड़े पैमाने पर साझेदार बनाए ताकि इससे भारत में 'एयरोस्पेस मैन्युफेक्चरिंग इंडस्ट्री' का विकास तीव्र हो। वह अमेरिका में नासा और स्पेस-एक्स जैसे सरकारी एजेंसी और निजी कंपनी के आपसी सहयोग जैसे मॉडल को भारतीय परिस्थितियों में संभव बनाना चाहती है। इससे देश, संबंधित कंपनियों और आखिरकार इसरो को लाभ पहुंचेगा।

निजी क्षेत्रों को कर रहा प्रोत्साहित: जल्द ही भारत का पहला पूर्णतः स्वदेशी उद्योग-निर्मित पीएसएलवी इसी परिवर्तन की ज्वलंत निशानी बनेगा। इसरो खूब जानता है कि निजी क्षेत्र जितना बड़ा होगा, उसको उतनी ही सुविधा होगी। वह उन पर बहुत से तकनीकी और निर्माण कार्यों की जिम्मेदारी देकर अपना ध्यान ज्यादा से ज्यादा प्रक्षेपण कार्यक्रमों एवं अनुसंधान मिशनों पर केंद्रित कर पाएगा। इसरो को निजी-सरकारी कंपनियों के सहयोग से तीन गुनी यान निर्माण क्षमता हासिल हो गई, तो उसका परोक्ष प्रभाव यह भी होगा कि इसरो के वैज्ञानिक मिशन तेजी से पूरे होंगे, वाणिज्यिक लॉन्च बढ़ेंगे। ऐसे में भारत वैश्विक उपग्रह-निर्माण और प्रक्षेपण बाजार में बेहद कमाऊ और प्रभावी खिलाड़ी बन सकेगा। इनके अलावा इस क्षेत्र में आत्मनिर्भरता और ज्यादा बढ़ेगी, तो विदेशी कंपनियों पर निर्भरता कम होती जाएगी। बड़ी बात यह भी कि पांच मॉड्यूल वाला देश का अंतरिक्ष स्टेशन समय पर स्थापित करने की संभावना भी इससे मजबूत होगी।

कई स्तरों पर करनी होगी पहल: इसरो के सभी प्रोजेक्ट्स समय से पूरे हों, इस लिए भी इसरो को अपनी यान निर्माण क्षमता को तीन गुना बढ़ाने के लिए प्रेरित किया है। चंद्रयान-4 भारत के लिए अमेरिका के अपोलो कार्यक्रम की तरह विशिष्ट होगा। यह चंद्रमा से नमूने वापस लाकर भारत को उस सैंपल रिटर्न टेक्नोलॉजी में सक्षम बनाएगा, जो संसार के महज तीन देशों के पास है। इसी तरह जापान की अंतरिक्ष एजेंसी जाक्सा के साथ लूपेक्स मिशन, चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर बर्फ की मौजूदगी तलाश उसकी उपयोगिता समझने का अवसर देगा। यह भविष्य के मानव मिशनों के लिए ईंधन और पानी का स्रोत समझाएगा। भारत अपने अंतरिक्ष स्टेशन के पहले मॉड्यूल को 2028 तक पूरा करते हुए 2035 तक पांच मॉड्यूल वाला अंतरिक्ष स्टेशन स्थापित करना चाहता है। इस पूरे प्रकरण में सरकार की जो भूमिका हो सकती है, वह यह है कि उसके द्वारा अंतरिक्ष नीति और विनियमों को सरल बनाया जाए ताकि निजी निवेश, इसरो को लंबी अवधि की फंडिंग और स्टार्टअप ईकोसिस्टम को बढ़ावा मिले, मानव अंतरिक्ष उड़ान कार्यक्रम पर नियमित निवेश एवं निजी भागीदारी को गति मिले, जिससे इसरो अधिक प्रक्षेपण केंद्र और ट्रैकिंग स्टेशन स्थापित कर सके। अंतरराष्ट्रीय सहयोग के विस्तार पर भी सरकार को जोर देना होगा। फिलहाल इसरो का फैसला देश को वैश्विक अंतरिक्ष बाजार में आर्थिक शक्ति बनाएगा, लाखों नौकरियों का सृजन, युवा वैज्ञानिकों के लिए अवसर पैदा करेगा। *

कई प्रोजेक्ट्स पर हो रहा काम

इसरो के लिए आने वाला दशक निर्णायक है। इस वर्ष और अगले वर्ष में इसरो के पास आधे दर्जन से अधिक महत्वपूर्ण कार्यक्रम शेष हैं और अगले कुछ वर्षों में संचालित होने वाले इसरो के पूर्व नियत कई प्रमुख अभियान तो बहुत जटिल और महत्वाकांक्षी हैं। गगनयान के कई मानव-रहित परीक्षण, मानव सहित गगनयान, 2028 में जाने वाला चंद्रयान-4, जापानी अंतरिक्ष एजेंसी के साथ मिशन लूपेक्स, एसएसएलवी निर्माण तथा रि-यूजेबल लॉन्च व्हीकल का विकास, शुक्रयान और भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन, नई पीढ़ी के संचार उपग्रह जैसे कई महत्त्वाकांक्षी मिशन पर कार्य जारी है।

डिजिटल गेम्स वर्तमान है शानदार-उज्ज्वल है भविष्य

हाल के वर्षों में मनोरंजन के लिहाज से डिजिटल गेम्स का क्रेज जबर्दस्त तरीके से बढ़ा है, निरंतर इसमें इजाफा भी हो रहा है। खासतौर पर इसे लेकर नई पीढ़ी में बहुत दीवानगी देखी जाती है। इसकी क्या हैं वजहें और कैसा है भविष्य, जानिए।

टेक्नोलाइफ
लोकमित्र गौतम

आज के युग में मनोरंजन, शिक्षा और तकनीकी प्रयोग का सबसे लोकप्रिय माध्यम बन चुके हैं-डिजिटल गेम्स। मोबाइल, कंप्यूटर, टैबलेट और गेमिंग कंसोल के जरिए खेले जाने वाले ये खेल महज खेल नहीं हैं बल्कि आज की तारीख में अरबों रुपए का कारोबार भी है। नई पीढ़ी के बीच इन डिजिटल गेम्स का आकर्षण इतना अधिक है कि अब ये डिजिटल गेम्स एक पूरी संस्कृति का रूप ले चुके हैं।

क्या होते हैं डिजिटल गेम्स: डिजिटल गेम्स सही मायने में इलेक्ट्रॉनिक खेल होते हैं। इन्हें डिजिटल गेम इसलिए कहा जाता है, क्योंकि ये किसी डिजिटल डिवाइस के जरिए खेले जाते हैं। जैसे- कंप्यूटर, लैपटॉप, मोबाइल फोन, टैबलेट या वीडियो गेम कंसोल। डिजिटल गेम्स में ग्राफिक, ध्वनि और उपयोगकर्ता का सीधे-सीधे संपर्क या इंट्रैक्शन संभव है। यह इंट्रैक्शन या संपर्क दो तरीके से होता है। इसमें एक है वर्चुअल अनुभव। वास्तव में यह किसी अनुभव के आधार पर तैयार किए जाते हैं और यहीं इनकी भूमिका बदल जाती है। यह केवल शारीरिक सक्रियता या महज मनोरंजन का कारण नहीं होते बल्कि कभी-कभी सीखने, कभी रणनीति बनाने, कभी निर्णय क्षमता को परखने या उसे विकसित करने तथा कभी-कभी हीनभावना को दूर करने का तरीका भी होते हैं।

दीवानी है नई पीढ़ी: नई पीढ़ी में डिजिटल गेम्स को लेकर बहुत ज्यादा आकर्षण या कहें क्रेज है। विशेषकर जनरेशन जेड और अल्फा, डिजिटल दुनिया में जन्मी, पली-बढ़ी पीढ़ियां इन खेलों की दीवानी हैं। इसकी सबसे बड़ी वजह यह है कि इनका बचपन मोबाइल और इंटरनेट के साथ खेलते और इस्तेमाल करते हुए गुजरा। इसलिए डिजिटल गेम्स को ये मनोरंजन नहीं कहते बल्कि अपने व्यक्तित्व की पहचान, प्रतिस्पर्धा और आत्म अभिव्यक्ति का माध्यम मानते हैं।

इसलिए बढ़ रहा इतना क्रेज: नई पीढ़ी में डिजिटल गेम्स का इतना क्रेज इसलिए है, क्योंकि यह वास्तविक अनुभव देता है। आज के डिजिटल गेम्स में एक साथ वीआर यानी वर्चुअल रियलिटी और एआर यानी ऑग्मेंटेड रियलिटी का इस्तेमाल होता है, जिसे खिलाड़ी इन्हें दूर से खेलता हुआ नहीं लगता बल्कि खुद को वह खेल के भीतर का हिस्सा समझता है और खेल के रोमांच को पल-पल महसूस करता है। दुनिया के किसी कोने से किसी दोस्त के साथ, किसी अजनबी के साथ, इन खेलों को खेला जा सकता है यानी आज की डिजिटल लाइफ के अनुकूल ये ऑनलाइन गेम की सुविधा प्रदान करते हैं और सबसे आकर्षक बात यह है कि डिजिटल गेम्स, एक रिवॉर्ड सिस्टम से भी जुड़ा होता है यानी प्वाइंट, लेवल और खरीदारी के लिए वाउचर जैसी सुविधाओं का मौजूद होना खिलाड़ियों को अलग ही दुनिया के रोमांच से जोड़ देते हैं। आज की तारीख में डिजिटल गेम्स महज खेलने की डिजिटल गतिविधि भर नहीं हैं बल्कि यह एक किस्म की सामाजिक प्रतिष्ठा बन चुके हैं। युवाओं में गेमिंग अब अपने आपमें एक स्टेटस सिंबल बन चुका है। लोकप्रिय गेम्स में बेहतर प्रदर्शन करने वालों को सोशल मीडिया पर फॉलोअर्स और फैंस भी मिलते हैं। इस तरह डिजिटल गेम्स मनोरंजन करने के साथ-साथ हमारे तनाव मुक्ति का भी जरिया हैं। इस कारण भी युवाओं में डिजिटल गेम्स को लेकर जबरदस्त क्रेज है।

ऐसे हुई डिजिटल गेम्स की शुरुआत: वर्ष 1962 की बात है, एमआईटी यानी मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, अमेरिका में दो युवाओं ने मिलकर दुनिया का पहला डिजिटल गेम स्पेस वार बनाया। स्टीव रसेल और उनके दोस्त मार्टिन ग्रेट्ज ने पहले-पहल इस डिजिटल गेम्स की अवधारणा को 1961 में रखा था। लेकिन बाद के एक साल में उनके साथ उनके चार और दोस्त आ जुड़े, ये थे- वेन विटानन, पीटर सैमसन, डेन एडवर्ड्स और एलन कोटाक। इन सभी ने मिलकर दुनिया का पहला डिजिटल गेम्स स्पेस वार सीडीपी-1 कंप्यूटर पर बनाया। यहीं से आधुनिक वीडियो गेम उद्योग की शुरूआत हुई।

जहां तक भारत में डिजिटल गेमिंग की शुरुआत का सवाल है तो यह सन 1990 के दशक में आया, जब कंप्यूटर और इंटरनेट भी धीरे-धीरे आम लोगों तक पहुंचने लगे थे। भारत का पहला स्वदेशी डिजिटल गेम 'भारतः द गेम' (1998) माना जाता है, जिसे सिनका गेम्स कंपनी ने विकसित किया था। हालांकि गेम बहुत अधिक लोकप्रिय नहीं हुआ।

डिजिटल गेम्स का भविष्य: जहां तक डिजिटल गेम्स की दुनिया के भविष्य का सवाल है तो यह बेहद उज्ज्वल और तकनीकी रूप से बेहद रोमांचक है। साल 2025 में वैश्विक गेमिंग इंडस्ट्री बढ़कर 250 अरब अमेरिकी डॉलर की हो चुकी है और इसमें बहुत बड़ा हिस्सा भारत के डिजिटल गेम्स प्रेमियों का भी है। क्योंकि साल 2024 के अंत तक भारत में सक्रिय गेम्स की संख्या बढ़कर 40 करोड़ हो चुकी है। शायद यह डिजिटल गेमिंग का ही विस्तार है कि आज ई-स्पोर्ट्स की दुनिया बड़े पैमाने पर उभरी है और लाखों लोग इसे अपना करियर बनाकर अपना भविष्य आर्थिक रूप से सुरक्षित कर रहे हैं। *

कविता
पुरुषोत्तम व्यास

गिरना भी अच्छा होता

कभी-कभी गिरना भी अच्छा होता,
गिरने से संभलना सीखते
फिर चलना सीखते।
समझ में आता है
अति हर चीज की
अच्छी होती नहीं,
बात-बात पर अहंकारी,
और ज्यादा ज्ञानी
समझने से बच जाते।
बात यह भी जरूरी है कि
गिरने को किस रूप में देखते हो,
विचलित होते हो या
नए साहस से आगे बढ़ते हो
गिरने से दिमाग भी
ठिकाने रहता
अपने और पराए पर
पर्दा उठ जाता।
अगर गिरे तो फिर
नए रूप लेकर उठो
नए विचार लेकर उठो
बेफिक्र होकर जीना सीखो
इसलिए कभी-कभी
गिरना भी अच्छा होता है।

व्यंग्यात्मक संस्मरण
डॉ. मुकेश असीमित

टिकट विंडो की लाइन

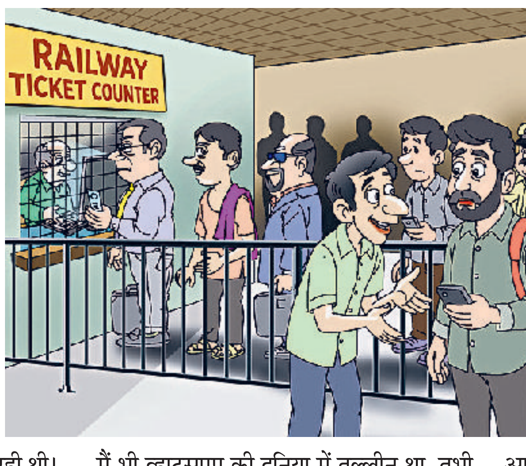

रेलवे स्टेशन की टिकट विंडो आजकल किसी आध्यात्मिक तप जैसी लगती है। अमृत योजना का थोड़ा-बहुत बजट खर्च कर चार खिड़कियां बना दी गई हैं, पर चारों के सामने उतनी ही लंबी लाइनें, मानो चार अलग-अलग धर्मपंथ हों और भक्त सभी जगह समान संख्या में हों।

मैं बड़ी होशियारी से सबसे छोटी लाइन में लगा, और जैसे ही लगा किस्मत मेरी गर्दन पकड़कर मुझ पर हंस रही हो जैसे। मेरी लाइन कछुए की चाल से और बाजू वाली लाइन खरगोश की गति से फुर्र-फुर्र बढ़ती जा रही थी।

खिड़की पर एक बुजुर्ग बाबू थे, शायद रिटायरमेंट के ठीक पहले के अंतिम वर्ष में। चश्मा उतारते, लगाते, की-बोर्ड को किसी वेद-पाठ की तरह एक-एक अक्षर छूते। स्क्रीन पर अक्षर प्रकट होता तो उनके चेहरे की झुर्रियां भी खिल उठतीं, मानो तकनीकी उन्नयन का चमत्कार उन्हें रोज नई जवानी दे रहा हो। रेलवे ने शायद फैसला कर रखा है कि यह महाशय अपना अंतिम प्रण और अंतिम प्रणय दोनों इसी खिड़की पर छोड़ेंगे।

इतने में एक दुबला-पतला अधेड़ मेरी कोहनी पसलियों में गड़ाता हुआ फुसफुसाया, 'कौनसी ट्रेन चाहिए साहब? बोलो तो जुगाड़ कर दूं, अंदर तक पहुंच है। बस सौ का एक नोट एक्स्ट्रा।'

मैंने विनम्रता से मना कर दिया। विनम्रता पर उसने जर्दे-भीगे होंठों से मोबाइल और मुझे संयुक्त रूप से एक गाली दी और फुर्र हो गया। उसकी प्रतिक्रिया खीझ से उत्पन्न हुई, जैसे कोई एक डील होते-होते रह गई हो।

मोबाइल ही आजकल इन लंबी लाइनों का आधुनिक तपो-साधन है, सभी यात्री उसमें गुम। मैं भी व्हाट्सएप की दुनिया में तल्लीन था, तभी आगे शोर हुआ। एक यात्री जिसकी ट्रेन छूटने वाली थी, लाइन तोड़कर हथेली खिड़की के नैनो साइज के छेद में घुसा चुका था कि दूसरा यात्री अपना हाथ निकाल ही नहीं पा रहा था। अब विवाद यह नहीं कि किसकी बारी, बल्कि यह कि सबसे पहले हाथ कौन निकाले!

बाबू ने सीटी बजाई। दो पुलिसकर्मी अपनी तोंदें, बाल्टी की तरह लटकाते हुए आए। लाठी को हवा में घुमाते हुए स्थानीय भाषा में अपशब्दों का ऐसा समन्वित गान किया कि लाइन तुरंत सीधी हो गई। दोनों यात्रियों के हाथ बड़ी मुश्किल से निकाले गए। इस खींचतान में एक की हस्त-धारित भारतीय मुद्रा फट गईं और उसके मुंह से निकली गालियां व्यवस्था की संपूर्ण संस्थाओं को समर्पित थीं, रेलवे, सरकार, मंत्री से लेकर कुली तक कोई नहीं छूटा।

मैं फिर मोबाइल में चला गया। नया वर्ष आने में महीना है लेकिन कंपनियां जैसे चाहती हैं कि इस बार मैं चार नए कपड़ों, दो नई चॉकलेटों और पांच नए कूपनों से लैस रहूं। ऑफर ऐसे कि लगता है हर कंपनी ने मेरे लिए ही सुकुमारी ब्रांड की मॉडल को विज्ञापन में खड़ा किया है। एक बार जल्दबाजी में मैंने सुकुमारी के मोहपाश में बंधे सब्सक्रिप्शन डाल दिया था, तभी से वह मेरे जीवन की स्थाई सदस्य बन चुकी है।

मोबाइल भी क्या करे। कंपनियां चाहती हैं कि आप दिन-रात उसी से चिपके रहो। कभी धमाका सेल, कभी फ्लैश सेल, कभी लास्ट स्टॉक, हड़प लो!

नई पीढ़ी को ये सेल-ऑफर ऐसे जकड़ती है कि किसी उल्टे-सीधे काम में ऊर्जा लगे, उससे अच्छा है कि स्क्रीन पर अंगूठा फिसलाते रहो। गेम्स, जुआ, सट्टा, लॉटरी सब आपके दरवाजे पर नहीं, आपकी जेब में बैठा है।

इधर मेरा मोबाइल भी मेरा पूरा जीवन समझता है- कब रिचार्ज खत्म होगा? कब बीमा एक्सपायर होगा? कब कार की सर्विसिंग करानी है?

कब पुरानी कार बेचे चार साल हो गए? यह सब याद दिला रहा है।

सच कहूं तो मोबाइल ने आदमी को अकेला किया, या अकेलापन आदमी को मोबाइल तक ले गया, ये तफरीक अब मैं भी नहीं कर पाता।

मोबाइल पर आध्यात्मिक गुरुओं के संदेश, प्रेरक कथन और भविष्यवाणियां भी तड़ातड़ आ रहे हैं। सुबह-सुबह इतनी 'ज्ञान-वर्षा' कि दिमाग की हार्ड डिस्क फुल होकर ओवरहीट हो जाए। पर सही कहूं, रेलवे की लाइनें और मोबाइल दोनों ही हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था की लाइफलाइन हैं। एक में लगकर देश चलता है और दूसरे में खोकर आदमी। इतने में मेरी लाइन भी दो-चार इंच आगे बढ़ गई।

शायद मेरे नंबर का भी समय आ रहा था और मोबाइल पर एक नया मैसेज भी। *

लघुकथा / सतीश उपाध्याय

दरवाजा

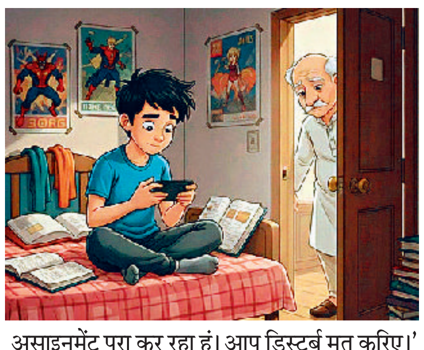

मम्मी, दादाजी की वजह से हमारी पढ़ाई डिस्टर्ब होती है, बार-बार हमारे कमरे में आ जाते हैं।' परेश ने अपनी मां से दादाजी की शिकायत की। सामने कुर्सी पर बैठे दादाजी अखबार पढ़ रहे थे, वह तुरंत बोले, 'नहीं बेटा, ऐसी बात नहीं है। तुमको मैंने तीन घंटे से नहीं देखा था, इसलिए ऐसे ही तुम्हें देखने तुम्हारे कमरे में चला आया था।' परेश की मम्मी बेटे का पक्ष लेते हुए बोलीं, 'बाबूजी, थोड़ा बुद्धि से काम लिया करिए। स्कूल से कितना होमवर्क मिलता है, असाइनमेंट पूरा करना होता है। अगर वह आपसे बात करेगा तो उसका होमवर्क कैसे पूरा हो पाएगा?' दादाजी आहिस्ता से बोले, 'बेटा बात सही है, अब मैं आगे से ध्यान रखूंगा।' अगला दिन छुट्टी का था। परेश सारा दिन अपने लैपटॉप और मोबाइल में ही बिजी था। दादाजी के भीतर अपने पोते के प्रति प्यार उमड़ा तो वह अपने आपको रोक नहीं पाए। परेश के कमरे में चले गए। परेश के बेड पर स्कूल की कॉपी-किताबें बिखरी हुई थीं। वह मोबाइल में बिजी था। उसने दादाजी की आहट सुनी, लेकिन वह दादाजी की उपेक्षा करते हुए अपने मोबाइल में ही लगा रहा। दादाजी ने पूछा, 'क्या कर रहे हो बेटा?' परेश रूखे स्वर में बोला, 'दादाजी देख नहीं रहे हैं, मैं अपना असाइनमेंट पूरा कर रहा हूं। आप डिस्टर्ब मत करिए।' 'ठीक है बेटा, कितना समय लगेगा, इसे पूरा करने में?' दादाजी ने बड़े प्यार से पूछा। 'दादाजी मैं अभी कैसे बता दूं, आप डिस्टर्ब मत कीजिए प्लीज।' परेश ने तेज स्वर में बोला। 'ठीक है बेटा, मैं नीचे तुम्हारा इंतजार कर रहा हूं।' यह कहकर दादाजी ने कमरे से बाहर निकलते समय पलटकर देखा, परेश अपने मोबाइल में लगा दिखा। दादाजी के कमरे से निकलते ही परेश ने अपने कमरे का दरवाजा तेज आवाज के साथ बंद कर दिया। दादाजी कुछ देर दरवाजे के पास भाव शून्य खड़े रहे। उनकी आंखों में एक नमी उतर आई थी। *

पुस्तक: छवि से अलग (संस्मरण), **लेखक:** विनोद दास, **मूल्य:** 295 रुपए, **प्रकाशक:** सेतु प्रकाशन, नोएडा

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

छवि से अलग

हाल में ही वरिष्ठ साहित्यकार विनोद दास के संस्मरणों की पुस्तक 'छवि से अलग' छपकर आई है। इसमें चौदह नामचीन साहित्यकारों के साथ ही पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी से जुड़ा संस्मरण भी संकलित है। इन संस्मरणों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इनमें सम्मिलित हस्तियों की कई अनावृत्त रही छवियां उजागर होती हैं। ये छवियां उनके साहित्यिक ही नहीं व्यक्तिगत जीवन से भी जुड़ी हुई हैं। लेखक ने निरपेक्ष भाव से इनकी खूबियों और खामियों को सामने रखा है। इसके साथ ही साथ कई संस्मरणों में लेखक, समानांतर रूप से उस देश, काल और परिस्थितियों का भी वर्णन करते चलते हैं, जब इन अनुभूतियों को वे अर्जित कर रहे थे। निर्मल वर्मा, नामवर सिंह, श्रीलाल शुक्ला, कुंवर नारायण, केदारनाथ सिंह, अखिलेश, शानी और मुद्राराक्षस जैसे कई साहित्यकारों के बारे में यह किताब बहुत कुछ अनसुना बताती है। *

अगर आपको गांव की खूबसूरती, वहां का प्राकृतिक वातावरण लुभाता है, साथ ही पक्षी प्रेमी भी हैं तो आपको इस मौसम में 'भारत का पक्षी गांव' के नाम से प्रसिद्ध मेनार गांव जरूर जाना चाहिए। किस तरह से मेनार गांव, पक्षी-प्रकृति संरक्षण की मिसाल बन गया है, वहां से लौटकर बता रहे हैं लेखक अपनी जुबानी।

पक्षी संरक्षण की मिसाल मेनार गांव

पर्यटन स्थल
समीर चौधरी

हाल ही में मैं उदयपुर घूमने गया था। जब मुझे स्थानीय लोगों से पक्षी संरक्षण के लिए मशहूर मेनार गांव के बारे में पता चला तो खुद को रोक नहीं पाया। राजस्थान के खूबसूरत शहर उदयपुर के नजदीक स्थित मेनार गांव में मैं बिना किसी असुविधा के बिल्कुल सुबह पहुंच गया था। सुबह होते ही मेनार में चिड़ियों का चहचहाना हर ओर से सुनाई पड़ने लगता है। खासतौर पर मानसून के बाद सर्दी के मौसम की शुरुआत होने पर यह नजारा बहुत मनभावन लगता है, जब दूर देशों से बड़ी संख्या में पक्षी जाड़ों के अपने इस आवास में लौटने लगते हैं। दशकों से मेनार 100 से अधिक स्थानीय और ठंडे इलाकों से पलायन करके आने वाले पक्षियों का अभयारण्य बना हुआ है। यहां आने वाले प्रमुख पक्षियों में फ्लेमिंगो,

पेलिकन, कूटस और लुप्त होने की कगार पर पहुंच चुका सारस क्रेन भी शामिल हैं। इन्हें देखने के लिए दूर-दूर से पक्षी प्रेमी यहां आते हैं।

ग्रामीणों की भूमिका महत्वपूर्ण: मेनार गांव की विशेषता केवल इसकी जैव-विविधता ही नहीं है बल्कि यहां के लोग भी हैं, जिनकी वजह से पक्षी संरक्षण संभव हो सका है। मेनार के लोगों का यहां आने वाले मेहमान पक्षियों से लगाव का सिलसिला लगभग दो शताब्दी पहले आरंभ हुआ था। मुझे स्थानीय लोगों ने ही बताया कि वर्ष 1832 में यहां की एक झील के किनारे किसी ब्रिटिश अधिकारी ने एक पक्षी को गोली मार दी थी। उससे नाराज ग्रामीणों ने तुरंत ही उस ब्रिटिश व्यक्ति को गांव से बाहर जाने पर मजबूर कर दिया। यह कहानी लोककथा बन गई और इसी ने मेनार के पक्षी प्रेम और संरक्षण की आधारशिला रखी। समय के साथ मेनार के लोगों ने अपने तालाबों (ब्रह्म तालाब, धंड तालाब और खेरोड़ा तालाब) को जीवंत वेटलैंड्स में बदल दिया। इनके प्रयास रंग लाए। मेनार को आधिकारिक तौर पर राजस्थान के पहले पक्षी गांव के रूप में मान्यता मिल गई और उसे रामसर साइट (अंतरराष्ट्रीय महत्व का वेट लैंड, जो जीव संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है) घोषित किया गया। मेनार को वर्ष 2023 में भारत के सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गांवों में भी शामिल किया गया।

जागरूक हैं स्थानीय निवासी: मेनार में पक्षियों को देखते हुए मेरी मुलाकात स्थानीय निवासी दर्शन मेनारिया से हुई, जो पक्षी-मित्र कहे जाते हैं। अपनी इस पहचान पर उन्हें गर्व है। हालांकि वह एक विद्यालय में अध्यापक

भी हैं। दर्शन कितना भी व्यस्त रहें, अगर उन्हें किसी पक्षी के चहचहाने की आवाज सुनाई पड़ती है तो वह पक्षियों के गीत सुनने में मगन हो जाते हैं। वे अपने छात्रों से भी कहते हैं कि पक्षियों के गीत को सुनो। जब छात्र पक्षी को देखेंगे और पहचानेंगे, तभी वे वास्तव में उनकी देखभाल करेंगे, उनके संरक्षण में अपना योगदान देंगे।

ऐसे किया जा रहा संरक्षण: मेनार में पक्षी संरक्षण केवल जागरूकता का विषय नहीं, वहां की जीवनशैली का हिस्सा बन चुका है। यहां धार्मिक रीति-रिवाजों का आयोजन झील के किनारों पर किया जाता है ताकि मानव और प्रकृति का संबंध मजबूत किया जा सके। यहां मछली पकड़ने और गर्मी में की जाने वाली खेती को स्थानीय लोगों ने अपनी इच्छा से बंद कर दिया है ताकि पक्षियों के ठहरने की जगहों को सुरक्षित रखा जा सके। झीलों से पानी भी बहुत कम निकाला जाता है। ग्रामीण अपनी जरूरतों के साथ पक्षियों की जरूरतों का भी पूरा ध्यान रखते हैं।

सरकारी प्रयासों की बात करें, तो राजस्थान वन विभाग द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त पक्षी-मित्र हाथ में बाइनोक्यूलर्स (दूरबीन) लेकर सुबह-शाम को झीलों की निगरानी करते हैं। वे यहां आने वाले पक्षियों की गतिविधियों, पलायन पैटर्न को ऑब्जर्व करते हैं और खतरे की स्थिति में सावधान करते हैं। इस स्थानीय निगरानी ने न केवल सामान्य जलमुर्गियों को सुरक्षित रखने में मदद की है बल्कि उन प्रजातियों के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिन पर लुप्त होने का खतरा मंडरा रहा है।

बन चुकी है डॉक्यूमेंट्री फिल्म: फिल्म मेकर गुंजन मेनन ने मेनार की कहानी को अपनी अवॉर्ड-विनिंग डॉक्यूमेंट्री 'विंग्स ऑफ होप' (उम्मीदों के पर) में भी प्रस्तुत किया है। वह इसे 'विश्वसनीय नेतृत्व की कहानी' कहती हैं। इस फिल्म में उन्होंने बताया कि जमीनी प्रयासों से वह हासिल किया जा सकता है, जो अकसर बड़े पैमाने की नीतियों या बड़े बजट से नहीं मिलता।

बहरहाल, मेनार गांव देश ही नहीं, दुनिया भर के पक्षी प्रेमियों के लिए मिसाल बन गया है। *

जब करें घने कोहरे में ड्राइविंग

रखें इन बातों का खास ध्यान

सर्दी के मौसम में जब घना कोहरा छाया हो, तो विजिबिलिटी बहुत कम हो जाती है। ऐसे में ड्राइविंग बेहद चुनौतीपूर्ण हो जाता है। थोड़ी सावधानी और कुछ जरूरी बातों का ध्यान रखकर आप धुंध वाले मौसम में भी सेफ ड्राइव कर सकते हैं।

सजगता
विवेक कुमार

हालांकि अभी बहुत अधिक ठंड नहीं हो रही है लेकिन आने वाले दिनों में इसमें इजाफा होगा। हाड़ कंपा देने वाली भीषण ठंड और घने कोहरे में वाहन चलाना बहुत चुनौती भरा काम होता है। देर रात में या पौ फटने से पहले सुबह के समय कोहरे के कारण जब विजिबिलिटी का स्तर कम हो जाता है, तब ड्राइविंग करना और मुश्किल होता है। ऐसे में अगर आपके लिए कहीं जाना बेहद जरूरी है और आप अपने वाहन से जा रहे हैं, तो घने कोहरे में सुरक्षित सफर के लिए कुछ बातों का ध्यान रखें।

ड्राइविंग पर फोकस्ड रहें: ड्राइविंग करते समय मोबाइल फोन पर किसी से बात करना, बगल में या पीछे सीट पर बैठे व्यक्ति के साथ लगातार बात करना, म्यूजिक सुनना, इन

तमाम कामों से आपका फोकस ड्राइविंग से हट सकता है। घने कोहरे में अगर आप ड्राइविंग कर रहे हैं तो आपका ध्यान पूरी तरह ड्राइविंग पर ही केंद्रित रहना चाहिए। सामान्य दिनों में भी इस तरह की सावधानी बरतनी चाहिए।

स्पीड कम रखें: कोहरे में गाड़ी बहुत धीमी गति में चलानी चाहिए। इससे दुर्घटना होने की आशंका तो कम होती ही है, किसी भी तरह की दुर्घटना होने पर नुकसान ज्यादा नहीं होता है। अपने आगे चलने वाले वाहन के बीच पर्याप्त गैप रखते हुए धीरे-धीरे ड्राइव करें। इससे आपको अचानक ब्रेक लगाने या गति बदलने के लिए पर्याप्त समय मिल जाता है। कोहरे में गाड़ी ड्राइव करते समय अचानक अपनी लेन बदलने से भी बचें, क्योंकि विजिबिलिटी कम होने के कारण आपकी गाड़ी की गति और दिशा का अनुमान पीछे से आने वाले दूसरे वाहन का चालक नहीं लगा पाता है, इससे एक्सीडेंट की संभावना होती है।

सावधानी से गाड़ी मोड़ें: अगर आपको किसी मोड़ पर अपनी गाड़ी मोड़नी है तो अपनी गाड़ी की गति पहले से ही धीमी कर लें, क्योंकि कोहरे में बिल्कुल करीब की भी चीज दिखाई नहीं देती है। ऐसे में अगर गाड़ी मोड़ते समय गति तेज हुई तो दुर्घटना होने का डर रहता है। धुंध में ओवरटेकिंग करना बहुत खतरनाक हो सकता है, क्योंकि विजिबिलिटी बहुत कम होने से यह नहीं दिख पाता है कि आगे कोई वाहन है या नहीं और उसकी स्पीड कितनी है? इसलिए कोहरे में यथासंभव गाड़ी धीमे चलाएं और ओवर टेकिंग करने से बचें।

वाहन को रोक दें: यदि विजिबिलिटी बहुत ही कम हो, तो सड़क के किनारे सुरक्षित जगह पर गाड़ी को रोक कर थोड़ा कोहरा छंटने का इंतजार करना चाहिए। अपनी गाड़ी को जब सड़क पर किनारे खड़ा करें तो कार की हैजार्ड लाइट चालू रखें ताकि सड़क पर चलने वाले दूसरे वाहन आपकी कार को देख सकें और सुरक्षित तरीके से बगल से निकल जाएं।

विंडोज-विंड स्क्रीन को साफ रखें: घने कोहरे और ओस की बूंदों के कारण विंडोज और विंड स्क्रीन पर लगा सीसा बार-बार धुंधला हो जाता है। ऐसे में विजिबिलिटी और भी कम हो जाती है। इससे बचने के लिए बीच-बीच में वाइपर चलाते रहें। कार के हीटर ऑन कर वाहन के अंदर से ही इन

पर जमने वाली भाप को कम किया जा सकता है। अधिक दिक्कत होने पर गाड़ी से उतर कर साफ कपड़े से इन्हें साफ करना चाहिए।

रेट्रो रिफ्लेक्टर टेप लगवाएं: अपनी कार के पीछे लाल रेट्रो रिफ्लेक्टर टेप लगवाने से आपके पीछे चलने वाले वाहन को आपके वाहन की स्थिति पता चलती रहती है। इससे दोनों की सुरक्षा सुनिश्चित होती है और दुर्घटना की आशंका से भी बचा जा सकता है। *

नदी गाथा
वीना गौतम

वैसे तो जम्मू-कश्मीर में कई मनोहारी झीलें और नदियां हैं। इन्हीं में से एक तवी नदी न केवल अपने प्रवाह सौंदर्य के लिए, अपनी धार्मिक-सांस्कृतिक महत्ता और अपनी गोद में समेटे जैव विविधता के लिए भी जानी जाती है।

महज जलधारा ही नहीं जम्मू की सांस्कृतिक आत्मा है तवी नदी

नदियां जीवनदायिनी होती हैं। नदियों के किनारे ही दुनिया की सभी सभ्यताएं और संस्कृतियां फली-फूली हैं। धरती पर नदियों के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। लेकिन जलवायु परिवर्तन, बढ़ती आबादी और नदियों के प्रति आम लोगों की उदासीनता के चलते धरती पर जल संकट तो गहराया ही है, अब नदियों के अस्तित्व पर भी संकट के बादल मंडरा रहे हैं। इसलिए नदियों का न केवल संरक्षण जरूरी है बल्कि हमें अपनी नई पीढ़ियों को इनके प्रति संवेदनशील भी बनाना जरूरी है ताकि इनका अस्तित्व बचा रहे और धरती पर इंसानी सभ्यता और संस्कृति भी हमेशा की तरह फलती-फूलती रहे। ऐसी ही एक महत्वपूर्ण और सुंदर नदी तवी, जम्मू शहर से होकर प्रवाहित होती है। जैसे किसी जीवंत शरीर में हृदय धड़कता है, वैसे ही जम्मू के लिए तवी की निरंतर बहती धारा है। यह नदी महज पानी की धार नहीं बल्कि जम्मू की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और भावनात्मक पहचान का आधार स्तंभ है। स्थानीय डोगरा समाज में तवी को सूर्य पुत्री कहा जाता है यानी, एक ऐसी बेटी, जिसे सूर्य देव से जीवन मिला हो। यही उसकी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व का आधार माना जाता है।

नदी का उद्भव और प्रवाह: तवी नदी शिवालिक पर्वतों की गोद से जन्मती है। सुधमाह महादेव के निकट डोडा जिले के कैलाश कुंड ग्लेशियर से इसका उद्गम माना जाता है।

तवी के किनारे स्थित बाग-ए-बहू का मनोरम दृश्य

4,220 मीटर की ऊंचाई से उतरकर यह नदी 141 किलोमीटर का सफर तय करके अखनूर के पास चिनाब नदी में मिल जाती है। अपने प्रवाह में यह पहाड़ी पत्थरों, झाड़ियों, घास के मैदानों और घाटियों को चीरते हुए आगे बढ़ती है। तवी नदी का प्रवाह इसे एक युवा नदी के रूप में दर्शाता है। क्योंकि इसका प्रवाह तेज, पथरीला और जल स्वच्छ होता है। गर्मियों में चूंकि हिमालय में बर्फ पिघलती है, इसलिए गर्मी के मौसम में इसमें पानी बढ़ जाता है, जबकि सर्दियों में नदी शांत और सक्रिय हो जाती है। इन दोनों मौसमों के विपरीत मानसून के आते ही तवी का शक्तिशाली और प्रचंड रूप देखने को मिलता है।

पौराणिक-धार्मिक महत्ता भी है बहुत: तवी का स्थान केवल भूगोल में ही महत्वपूर्ण नहीं है, पौराणिक आख्यानों और लोक-साहित्य में भी यह रची बसी है। सूर्य पुत्री कही जाने वाली तवी की मान्यता, डोगरा राजवंश के इतिहास की सांस्कृतिक धुरी मानी जाती है। जम्मू का प्रतिष्ठित बहू-किला इसी नदी के किनारे स्थित है। इसी के किनारे स्थित बाग-ए-बहू बागीचा, महामाया मंदिर और उसके पास की घाटियां, तवी को सौंदर्य की देवी का दर्जा देती हैं। तवी की वजह से ही ये स्थल इस शहर की आकर्षक धरोहरों में शामिल हैं। प्राचीन मंदिरों, धार्मिक अनुष्ठानों में भी तवी नदी की भूमिका हमेशा रही है। डोगरा राज परिवार के संस्कार, पूजा-तीर्थ, अर्पण और पितृ श्रद्धा इसी नदी के तट पर संपन्न होती है। छठ पर्व, मकर संक्रांति, डोगरा मेलों और विशेष पूजा अर्चनाओं का केंद्र तवी नदी के तट ही होते हैं। शिवरात्रि में यहां विशेष उत्सव संपन्न होता है। डोगरी लोकगीतों में बार-बार तवी नदी का जिक्र आता है। यहां एक उक्ति बहुत प्रचलित है, 'तवी दे पाणियां वर्गे, सच्चे ने जम्मू दे लोग।' यानी तवी के पानी की तरह ही जम्मू के लोगों का मन भी निर्मल है। तवी जम्मू की आत्मा है। इसके रिवर फ्रंट, घाटों और हरित पट्टियों के माध्यम से यह नदी एक सांस्कृतिक स्थल के रूप में पुनर्जीवित हो रही है।

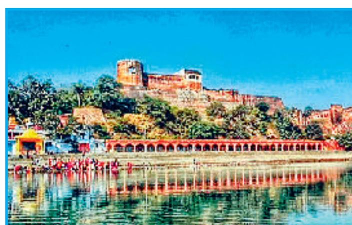

अखनूर फोर्ट के पास से प्रवाहमान तवी नदी

मौजूद है समृद्ध जैव विविधता: सिर्फ संस्कृति ही नहीं जम्मू क्षेत्र के पर्यावरण का भी मूल आधार तवी नदी ही है। इसकी घाटी में समृद्ध जैव विविधता पाई जाती है। देवदार, चीड़, शीशम, क्राप, पॉपुलर तथा अनेक औषधीय पेड़ इसके किनारे पनपते हैं और इसको समृद्ध वनस्पति स्थल बनाते हैं। इसी तरह तवी घाटी में हिमालयी लंगूर, पहाड़ी लोमड़ी, जंगली बिल्ली और काला भालू जैसे जीव जंतु भी पाए जाते हैं। इनके अलावा यहां किंग फिशर, उल्लू, बगुले, पहाड़ी गौरैया जैसे पक्षी इसकी जैव विविधता की गाथा कहते हैं। इसी में ट्राउट, महाशीर और क्रॉप जैसी मछलियों की भी उपस्थिति इसे खास बनाती है।

कई तरह से है उपयोगी: तवी का तेज प्रवाह इसका पथरीला तल इसे देश की दूसरी नदियों की अपेक्षा बेहद स्वच्छ रखता है। यह चिनाब की प्रमुख सहायक नदी है और सिंध प्रणाली में जल उपलब्धता बढ़ाने पर अपना योगदान देती है। इसके तलों पर उगने वाली घास और वृक्ष, नदी के कटाव को रोकते हैं और जैविक स्थिरता बनाए रखते हैं। शहर के मध्य से गुजरते समय इसका घुमावदार प्रवाह बहुत आकर्षक लगता है। यह जम्मू शहर के पेय जल की प्रमुख स्रोत है। साथ ही इससे जम्मू, उधमपुर और अखनूर जिलों की कृषि भूमि सिंचित होती है।

चुनौतियां हैं कई: हर नदी की तरह तवी के भी कुछ संकट हैं, जैसे शहर का बहने वाला नाला, कचरा और सीवेज इसे बीमार बनाता है। अवैध रेत खनन इसे घायल करता है और शहरीकरण का बढ़ता बोझ इसके विस्तार को छीनता जा रहा है, जो इसके जलस्तर में कमी का प्रमुख कारण बनता है। तवी महज एक नदी नहीं बल्कि जम्मू की सांस्कृतिक, भौगोलिक और ऐतिहासिक धरोहर है। इसे इतिहास की धड़कन और संस्कृति की आत्मा कहते हैं। जम्मू शहर की इस पहचान को संरक्षित किया जाना बहुत आवश्यक है। *

बड़ा पर्दा
हेमंत पाल

श्याम बेनेगल की 'अंकुर' में दिखा जीवन यथार्थ

बिमल रॉय की यथार्थपरक फिल्म 'दो बीघा जमीन'

जीवन-समाज की सच्चाई दिखाता

यथार्थपरक समानांतर सिनेमा

फिल्म निर्माण के शुरुआती दिनों से ही फिल्मकारों ने जीवन और सामाजिक यथार्थ को अपनी फिल्मों का विषय बनाना शुरू कर दिया था। हालांकि यह सामाजिक यथार्थ, पैरेलल सिनेमा में देखने को मिलता है। समानांतर सिनेमा को समृद्ध करने वाले फिल्मकारों और हिंदी सिनेमा में इस ट्रेंड पर एक नजर।

भारतीय सिनेमा में यथार्थवाद की झलक बहुत पुरानी बात है। ऐसी फिल्मों की नींव सन 1920 से 30 के दशक में ही पड़ गई थी, जब 1925 में बाबूराव पेंटर ने अपनी मूक फिल्म 'सावकारी पाश' बनाई, जिसमें वी. शांताराम ने गरीब किसान का किरदार निभाया था। वह किसान अपनी जमीन एक साहूकार को देने के लिए मजबूर हो जाता है और गांव छोड़कर शहर में मिल मजदूर बन जाता है। इसे भारत की पहली समानांतर फिल्म माना जाता है। साल 1937 में महिलाओं की दुर्दशा पर बनी फिल्म 'दुनिया ना माने' को भी समानांतर फिल्म की श्रेणी में ही रखा जाता है। समानांतर सिनेमा यानी पैरेलल सिनेमा को 'आर्ट सिनेमा' या 'नया सिनेमा' के नाम से भी जाना जाता है। माना जाता है कि हमारा समानांतर सिनेमा इटैलियन न्यू रियलिज्म, फ्रांस के फ्रेंच न्यू वेव और जापान के न्यू वेव सिनेमा से प्रभावित रहा है।

समानांतर सिनेमा ने ली नई करवट: शुरुआती 1920-30 के दशक में भले ही समानांतर सिनेमा बनाने के कुछ प्रयोग किए गए, लेकिन तब ये परंपरा कुछ खास आगे नहीं बढ़ सकी। सन 1940 से 1960 के दशक में समानांतर सिनेमा ने फिर से करवट ली। इस दौर में सत्यजीत रे, ऋत्विक घटक, बिमल राय, मृणाल सेन, ख्वाजा अहमद अब्बास, चेतन आनंद, वी. शांताराम जैसे दिग्गज फिल्मकारों ने इसे पल्लवित किया। इनकी फिल्मों पर साहित्य की गहरी छाप देखने को मिलती है। चेतन आनंद ने 1946 में 'नीचा नगर' जैसी बेहतरीन फिल्म बनाई। कान फिल्म फेस्टिवल में इस फिल्म को 'ग्रांड प्रिक्स डू फेस्टिवल' पुरस्कार मिला। इस तरह कान फिल्म फेस्टिवल में पुरस्कार पाने वाली पहली भारतीय फिल्म बनी-'नीचा नगर'। समानांतर फिल्मों की इस परंपरा को श्याम बेनेगल, गोविंद निहलानी, अदूर गोपालकृष्णन, गिरीश कासरवल्ली, मृणाल सेन, ऋत्विक घटक जैसे फिल्मकारों ने आगे बढ़ाया।

दिखता है जीवन का यथार्थ: समानांतर सिनेमा में जीवन और समाज का यथार्थ बहुत गहराई से दिखाया जाता रहा है। यह हिंदी सिनेमा का वह पक्ष है, जिसमें आम आदमी के जीवन की जद्दोजहद, सामाजिक असमानता और बदलाव को दर्शाया जाता है। फिल्मों के कथानक में यथार्थ को पूरी शिद्दत के साथ प्रस्तुत करने का यह चलन 1950 के दशक में पश्चिम बंगाल से शुरू हुआ और बाद में इसे हिंदी समेत हर भाषा के सिनेमा ने अपनाया। इसका मकसद जीवन के कठोर यथार्थ, समाज के हाशिए पर खड़े वर्गों, दलितों, महिलाओं और गरीबों की समस्याओं को दर्शकों के सामने लाना रहा, जिससे दर्शक खुद को जुड़ा महसूस करे। इन फिल्मों की यथार्थ परक कहानियां, आम लोगों की सामाजिक और आर्थिक जिंदगी से जुड़ी होती हैं। गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी, शहरी-ग्रामीण भेद, आर्थिक विषमताएं, जातिगत भेदभाव, स्त्री-पुरुष संबंध, नारी सशक्तिकरण जैसे मुद्दे समानांतर सिनेमा की पहचान रहे हैं। ये फिल्में पारंपरिक सिनेमा की तरह मनोरंजन या सपनों की दुनिया पर नहीं, बल्कि समाज की सच्चाइयों को विषय वस्तु बनाकर, बदलाव और सवाल उठाए जाने पर बल देती हैं। समानांतर सिनेमा का मकसद दर्शक को यथार्थ के करीब लाना और सांस्कृतिक-सामाजिक बदलाव की चेतना को जगाना रहा है। ये फिल्में भारतीय समाज के आइने का काम करती हैं।

दिखाई जाती है सामाजिक त्रासदी: समानांतर सिनेमा को जीवन का यथार्थ कहा जरूर जाता है, लेकिन यह आधा सच ही है। क्योंकि समानांतर सिनेमा का कैमरा हमेशा दमित और शोषित वर्ग पर ही फोकस होता रहा है। जबकि सिर्फ दमन और शोषण ही समाज का यथार्थ नहीं है। समाज के यथार्थ में खुशी और गम दोनों शामिल होते हैं। केवल त्रासदी और नकारात्मकता को ही समाज का यथार्थ नहीं माना जा सकता। यदि समाज के यथार्थ में जीवन के सभी पक्षों को शामिल किया जाए, तो ही समानांतर सिनेमा को यथार्थवादी सिनेमा कहना ज्यादा उचित होगा। यदि इसमें 'अंकुर' जैसी फिल्म शामिल है तो 'हम साथ साथ है' को भी शामिल किया जा सकता है।

इन फिल्मकारों का रहा बड़ा योगदान: समानांतर और यथार्थपरक फिल्मों की बात करें, तो इस परंपरा को समृद्ध करने में कई फिल्मकारों का बेहद महत्वपूर्ण योगदान रहा है। 1953 में आई बिमल रॉय की 'दो बीघा जमीन' ने समीक्षकों की प्रशंसा के साथ व्यावसायिक सफलता प्राप्त की थी। इसके बाद बिमल रॉय ने 'बिराज बहू', 'देवदास', 'सुजाता' और 'बंदिनी' जैसी यथार्थपरक फिल्में बनाईं। ऐसी फिल्में बनाने वाले फिल्मकारों में गुरुदत्त भी थे। उनकी फिल्म 'प्यासा' को हिंदी सिनेमा की कालजयी फिल्म माना जाता है। अमेरिका की 'टाइम' पत्रिका ने इसे 'ऑल टाइम बेस्ट 100 फिल्म्स' में जगह दी है। समानांतर सिनेमा की नई शुरुआत 1969 में मृणाल सेन की फिल्म 'भुवन सोम' से माना जाता है। ऐसे ही श्याम बेनेगल 1973 में 'अंकुर' बनाकर समानांतर सिनेमा के नवसृजन के प्रमुख हस्ताक्षर बने। सन 1976 में मृणाल सेन ने 'मृगया' बनाई, जो मिथुन चक्रवर्ती की पहली फिल्म थी। श्याम बेनेगल की फिल्में 'अंकुर', 'मंथन' और 'भूमिका', मणि कौल की 'उसकी रोटी' और 'दुविधा'। सत्यजीत रे की 'पाथेर पांचाली', 'शतरंज के खिलाड़ी', 'सद्गति'। इन सभी फिल्म मेकर्स का समानांतर सिनेमा को समृद्ध करने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। *